पितृकर्म प्रकाश एवं अन्त्येष्टि विधान

सम्पादक

डॉ. वेद प्रकाश शास्त्री (ज्योतिषाचार्य)
सु० स्व० पं० चेतराम जी रैणा

सह सम्पादक

पं० इन्द्र प्रकाश शास्त्री

पितृकर्म प्रकाश
एवं
अन्त्येष्टि विधान

पितृकर्म प्रकाश
एवं
अन्त्येष्टि विधान

सम्पादक

डॉ. वेद प्रकाश शास्त्री (ज्योतिषाचार्य)

सु० स्व० पं० चेतराम जी रैणा

सह सम्पादक

पं० इन्द्र प्रकाश शास्त्री

प्रकाशक

अनिल गोयल, पानीपत

प्रकाशक : **अनिल गोयल**
पानीपत

सर्वाधिकार : **सुरक्षित**

मूल्य : **श्रद्धापूर्वक एवं सविधि कृत्य करवाना**

शब्द संयोजन : **प्रखर इंटरनेशनल**
किशन गंज, दिल्ली–7

मुद्रक : **डी० के० फाईन आर्ट प्रैस प्रा० लि०**
अशोक विहार, दिल्ली–52

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	भूमिका	7–9
2.	मृत्युकाले दीप दानादि संकल्प	10
3.	अंत्येष्टि कर्म	11–14
4.	प्रार्थना	15
5.	अरदास	16–18
6.	पंचक विधान	19
7.	अस्थि संचय	20–26
8.	दशपिण्डी (दशगात्रविधिः)	27–30
9.	एकादशाह	31
10.	पिण्ड छेदन (सपिण्डन श्राद्ध)	32–33
11.	शय्यादान	34
12.	गौ दान	34
13	धर्मशान्ति प्रकरण	38–63
14.	धर्मशान्ति	39
15.	स्वस्तिवाचन एवं गणपत्यादि पूजन	41–43
16.	कलश स्थापन	44–45
17.	नवग्रह पूजन	46
18.	दश दिक्पाल पूजन	47–48

19.	हवन	49–52
20.	धर्मशान्ति पिण्ड दान	53–60
21.	शय्या दान	61
22.	गौदान एवं त्र्योदश पद दान	62–63
23.	चातुर्वाषिक (चौवरसी) श्राद्ध	64–77
24.	महालय श्राद्ध संकल्प विधि	78–86
25.	शास्त्रीय गौदान विधि	87–90
26.	सूतक–पातक निर्णय	91–95

भूमिका

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय, नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते'

हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने मनुष्य मात्र के लिए सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हेतु वेद पुराण आदि शास्त्रीय ग्रन्थों में अनेक नियम प्रस्तुत किए। 'धर्म-अर्थ, काम-मोक्ष' चारों पुरुषार्थों को व्यक्ति प्राप्त करे इसके लिए विविध संस्कारों के द्वारा मानव मात्र को उज्ज्वल मार्ग प्रदर्शित किया। गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त अठ्ठतालीस संस्कार नियत किए गए परन्तु युगान्तर में षोडश संस्कार ही प्रमुख माने जाने लगे अन्ततोगत्वा इस समय गिने चुने चार-पांच संस्कार ही शेष रह गए हैं। संस्कारों की क्या आवश्यकता थी? इस विषय में एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ—पेड़ से लकड़ी काट दी जाती है परन्तु जब उस लकड़ी को उत्तम शिल्पी अपने हाथों से संस्कृत कर मेज, कुर्सी, पलंग आदि का रूप दे देता है तो उसीलकड़ी का मूल्य बढ़ जाता है। इसी प्रकार संस्कारों से मनुष्यों में गुण प्रकट होते हैं, दोष परिमार्जित होकर व्यक्ति में पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्त करने की शक्ति समाहित हो जाती है। उचित समय पर निर्दिष्ट संस्कारों के किए जाने से मानव इह लौकिक सुख समृद्धि के साथ पारलौकिक आनन्द भी प्राप्त करके मनुष्य जन्म को सफल कर लेता था परन्तु आधुनिक युग में कालवश व्यक्ति धर्म से विमुख होकर दृश्य जगत् को ही सर्वस्व समझ कर सनातन नियमों की अवहेलना करते हुए धन और काम को ही अपना लक्ष्य मान चुका है तथा धर्म और मोक्ष के नाम तक को भूलता जा रहा है इसी कारण से आज मानव अभावग्रस्त, दुःखी एवं अशान्त है। जिस प्रकार समुद्र से जल वाष्प होकर बादल बनकर, पृथिवी पर बरसते हुए नदी, नालों के रूप में विभक्त हो जाता है परन्तु उसे शान्ति तभी प्राप्त होती है जब पुनः समुद्र में मिल जाता है इसी प्रकार ईश्वर का अंश जीव मायावश पृथक होकर योनियों में भटक रहा है परन्तु अपने परम

पद को प्राप्त किए बिना इसे शान्ति नहीं मिल सकती। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जीव को विविध संस्कारों से उस पद को पाने का अधिकारी बनाने का प्रयत्न किया गया था क्योंकि पात्रता (योग्यता) से ही व्यक्ति कुछ प्राप्त कर सकता है। अत: विस्तार में न जाते हुए मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि हम कहीं आधुनिकता की दौड़ में अपने अस्तित्व को भूलकर सभ्यता के नाम पर असभ्य न हो जाऐं? मनुष्यता से पशुता की ओर (पशुओं की तरह खड़े-खड़े खाना, खड़े-खड़े पेशाब करना आदि पश्चिमी सभ्यता के नाम पर) बढ़ते हुए अपने शाश्वत सनातन धर्म को न भूल जाऐं।

अस्तु, देव, ऋषि और पितृ ऋण इन तीन ऋणों से उऋण होने के लिए मानव मात्र के लिए कर्मकाण्ड का विधान निश्चित किया गया है, यज्ञ, देवपूजा होमादि से देव ऋण, स्वाध्याय, वेद, पुराण उपनिषदादि के पारायण से ऋषि ऋण एवं गुरुजनों की सेवा, सन्तान परम्परा तथा मृत पितरों के निमित्त किए गए श्राद्ध पिण्ड दानादि से पितृ ऋण से व्यक्ति मुक्त होता है।

षोडश संस्कारों के अन्तर्गत अन्तिम संस्कार अन्त्येष्टि संस्कार है इस संस्कार की निष्पन्नता से जीव का कल्याण होता है। व्यक्ति किए हुए कर्मों को अवश्य भोगता है— '**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**' पुत्र को आत्मज कहते हैं अर्थात् वह पिता का अपना ही रूप होता है। जैसे पिता आदि पूर्वजों के द्वारा किए गए कर्मों का फल भावी संताने भोगती हुई दिखाई देती हैं उसी प्रकार पुत्र, पौत्र आदि सन्तानों के द्वारा कृत कर्म पितरों को सुख-दुख (स्वर्ग, नरक) की प्राप्ति कराने में सहायक होते हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य के द्वारा प्रतिपादित कर्म सम्पूर्ण परिवार पर प्रभाव डालते हैं उदाहरणार्थ एक सदस्य धनोपार्जन करता है शेष सभी उपभोग करते हैं, शैशवावस्था एवं कौमारावस्था में प्राणी माता-पिता के द्वारा उपासित कर्मों का फल प्राप्त करता हुआ समय व्यतीत करता है। इसी प्रकार एक के द्वारा दुष्कर्म किए जाने पर परिवार के शेषजन भी दुखी हुए बिना नहीं रह सकते अर्थात् व्यक्ति दूसरे के द्वारा किए गए कर्मों से भी प्रभावित होता है। इसी आधार पर पुत्रों द्वारा किया अन्त्येष्टि संस्कार, श्राद्ध पिण्ड आदि क्रियाऐं मृत व्यक्ति को परलोक में उसके सुख में सहायक होती हैं जैसे भारतदेश में स्थित व्यक्ति के द्वारा भेजा हुआ रुपयों का मनीआर्डर अमेरिका में उसके सम्बन्धी को रुपयों के आकार में न मिलकर डालर के रूप में प्राप्त होगा इसी प्रकार प्रेतात्मा या पितरात्मा के निमित्त किया गया श्राद्ध पिण्ड आदि वायु के द्वारा एवं चन्द्र कलाओं (तिथियों) के माध्यम से उस जीव को देहान्तर में (जिस योनि में उसका जन्म हुआ हो उसी के अनुरूप आहार, सुख सुविधा आदि के रूप में) उसकी प्राप्ति होती है।

यद्यपि मुक्त जीव को इन सब की आवश्यकता नहीं रहती परन्तु मोह माया आदि में जकड़े हुए जीव के उद्धार के लिए ये सब कृत्य परमावश्यक हैं अन्यथा उसे दुर्गति का सामना भी करना पड़ सकता है अतः पूर्वजों की सद्गति हेतु एवं वंश की शुद्धतार्थ तथा पितृऋण से उऋण होने के लिए व्यक्ति को श्रद्धापूर्वक ये कार्य करने चाहिए क्योंकि—

'श्रद्धया क्रियते यत् तच्छ्राद्धमित्युच्यते'

अर्थात् जिसे श्रद्धा से किया जाए वही श्राद्ध कहा जाता है परन्तु— **'पितरःवाक्य-मिच्छन्ति भावमिच्छन्ति देवताः।'** इसके अनुसार शुद्ध (उच्चारण) रूप से किया गया कर्मकाण्ड इस लोक और परलोक में अक्षय एवं अमोघफल देने वाला होता है। कभी-कभी हमारे समाज में ऐसे अनेक अवसर आ जाते हैं जब अन्त्येष्टि संस्कार कराने के लिए विद्वान् का मिलना और कर्म का यथावत्-सम्पादित होना एक समस्या बन जाती है। इस परम्परागत विद्या को सुरक्षित रखने के लिए यह पुस्तक समाज को समर्पित है इसमें हिन्दी में विधि का निर्देशन किया गया है तथा दाह संस्कार, अस्थिसंचय दशपिण्डी, एकादशाह धर्मशान्ति एवं महालय श्राद्धों में संकल्प विधि शास्त्रीय गोदानविधि, चतुर्वार्षिक श्राद्ध तथा सूतक पातक निर्णय का समावेश किया गया है ताकि साधारण पढ़े-लिखे पण्डित भी इसके द्वारा पूरा कर्म यथोचित रूप में करा सकें। मैं श्री इन्द्रप्रकाश शास्त्री, पं. नरेन्द्रजी (नोशहरा) एवं पं. चमनलाल जी का आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लिए अपना सहयोग प्रदान किया। श्री अनिल गोयल जी का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इसके प्रकाशन में सहायता प्रदान की।

प्रस्तुत पुस्तक पूज्य पितृ चरणों की पावन स्मृति में समर्पित करते हुए मैं आशा करता हूँ कि— पण्डित वर्ग एवं आस्तिक विद्वान् जन समुदाय इसे अपना कर हमारा उत्साहवर्धन कर कृतार्थ करेंगे।

विनीत

डॉ० वेद प्रकाश शास्त्री
सु०पं० चेतराम जी रैणा
भौर कैम्प वार्ड नं०2 जम्मू

॥ अथ मृत्युकाले दीपदानादि संकल्प ॥

हरि ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णु तत्सदद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे आर्यावर्तैक देशान्तरगते पुण्य वृहस्पति क्षेत्रे सूर्य उत्तरायने (दक्षिणायने) मासोतमे मासे अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्ता, दासोऽहंवा) श्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्यफल प्राप्ति काम; पाप क्षयार्थं यममार्गे घोरान्धकार निवारणार्थं च दीपदानमहं करिष्ये।

इसी प्रकार—'अन्तकाले वैतरणी तर्तुकामः (वैतरणी निमित्त) गोदानमहं (गोरभावेन दक्षिणा द्रव्यं वा) करिष्ये।' (दातुमहमुत्सृजे)

लोहा, ताम्र, कांस्य पीतल धात्वादि निर्मित पात्रादि दानं माषमुद्गं तिलगोधूम तण्डुलादि अन्नादि दानमहं करिष्ये।

अथवा

अद्येति संकीर्त्य मम जन्मकालाद् आरभ्य अद्यावधि ज्ञाताज्ञात कायिक वाचिक मानसिक, सांसर्गिक, सकल पातकानां निरासार्थ श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं तिलादि अष्ट धान्यानि गोभू हिरण्य तिलाज्य वस्त्र, धान्य, गुड़, रजत, लवण, लोहा, ताम्र पात्र वैतरण्यादि धेनु दानमहं करिष्ये।

दान प्रतिष्ठा—इदं वैतरणी निमित्तक धेनुदान प्रतिष्ठार्थमिदं द्रव्यं यथानाम गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

!! अन्त्येष्टि-कर्म !!

शव को स्नानादि कराने के पश्चात् कर्मकर्ता तिल, दूध, मधु, घी आदि डाल कर जौ या चावल के आटे से पांच पिण्ड बनाकर बर्तन में रख ले और फिर अपसव्य (दाएँ कंधे पर जनेऊ रखकर) होकर शव के दक्षिण भाग में दक्षिणाभिमुख बैठकर देशकालादि का संकीर्तन कर और्ध्वदैहिक कर्म के निमित्त प्रतिज्ञा संकल्प करें—

'ॐ अद्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्या उत्तम लोक प्राप्त्यर्थम् और्ध्व दैहिकं करिष्ये'।

तदनन्तर दक्षिणाग्र तीन कुशाएं रख कर 'शव' नामक पिण्ड को कुशाओं पर रखे, पहले अवनेजन करे—

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अवनेजन (जल, पुष्प, तिल) कुशाओं पर छोड़ कर पिण्ड हाथ में लेकर—

अद्यामुक गोत्र अमुक प्रेत मृतिस्थाने शव निमित्तो ब्रह्मदैवतो वा एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

इससे कुशाओं पर रख दें। फिर पिण्ड पर प्रत्यवनेजन दे—

अद्यामुक गोत्र अमुक प्रेत अत्र पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड पर जल पुष्प तिल चढ़ा दे। यज्ञोपवीत सव्य (बाएं कंधे पर) करके प्रार्थना करे—

ॐ अनादि निधनो देवः शंखचक्रगदाधरः

अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्ष प्रदोभव।

इसके पश्चात् पिण्ड को शव के कफन में बांधकर शव को चार आदमी उठाकर द्वार पर ले आएं और वहाँ पर कर्मकर्त्ता पूर्वोक्त विधि से (प्रत्येक पिण्डदान से पूर्व

अवनेजन, पिण्डदान के पश्चात् प्रत्यवनेजन अवश्य दें) यज्ञोपवीत दाएं कंधे पर कर पांथ निमित्तक पिण्ड दें। पूर्ववत् अवनेजन देकर पिण्ड हाथ में लेकर

अद्यामुक गोत्र अमुक प्रेत द्वार देशे पांथ निमित्तो

विष्णु दैवतो वा एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

कुशाओं पर पिण्ड रख दे फिर प्रत्यवनेजन करे। उसके बाद जनेऊ सख्य (बाएं कंधे पर) करके प्रार्थना करें—

ॐ अनादि निधनो देवः शंखचक्रगदाधरः।

अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदोभव॥

इसके बाद शव यात्रा में भाग लेने वाले छोटे भाई पुत्रादि जन यवादि निर्मित पिण्ड लेकर यमराज का स्मरण करते हुए शव को भली प्रकार कफ़न में लपेट कर चद्दर आदि वस्त्रों से आच्छादित कर आगे कर श्मशान में ले जाऐं।

(मध्य में यदि चौराहा आए तो उस स्थान पर देने के लिए भी एक अतिरिक्त पिण्ड बनाकर पूर्वोक्ति विधि से अवनेजन करके खेचर निमित्तिक पिण्ड दें—

अद्यामुक गोत्राऽमुक प्रेत चत्वर खेचर निमित एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

तदनन्तर प्रत्यवनेजन दे, प्रार्थना करें। इसी प्रकार आगे चलकर) गांव और श्मशान के मध्य विश्राम स्थान में शव को रखकर पूर्वोक्ति विधि से विश्राम पिण्ड अवनेजन के पश्चात्—

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत विश्रान्तौ भूतनाम्ना

रुद्र दैवतो वा एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड दान कर प्रत्यवनेजन करने के बाद जनेऊ बाऐं कंधे पर (सव्य) कर—

ॐ अनादि निधनो देवः शंखचक्रगदाधरः।

अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्ष प्रदोभव॥

प्रार्थना करें तथा जल के पात्र (घड़े) से अखण्ड धारा शव के चारों ओर देकर पात्र को फोड़ दे तथा पुनः सभी बान्धवादि मृत (शव) के पीछे श्मशान में जाऐं।

इसके पश्चात् भूमि शोधक उपायों से भूमि समतल कर गोबर से प्रोक्षणकर गंगादि तीर्थों का मन में ध्यान कर उस स्थान पर कुशतिलादि फैलाकर उस पर आम,

पीपल, तुलसी चन्दनादि यज्ञीय काष्ठ से चिता निर्माण करे। चिता पर उत्तर की ओर सिर तथा दक्षिण की ओर पैर कर शव को सबस्त्र लिटा दें।

तब चिता स्थान में वायु नामक पिण्ड दें।

पहले जनेऊ अपसव्य (दाएं कंधे पर) कर कुशत्रय विछा कर पुष्प जल तिल लेकर पिण्ड स्थान पर अवनेजन देने के पश्चात् पिण्ड लेकर— **अद्यामुक गोत्र अमुक प्रेत चितास्थाने वायुनिमित्तको यम दैवतो वा एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

भूमि पर रखकर प्रत्यवनेजन देकर जनेऊ सव्य (बाएं कंधे पर) कर प्रार्थना करें—

ॐ अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः।
अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदोभव॥

फिर शुद्ध भूमि में वेदी बनाकर पंच संस्कार कर क्रव्याद् संज्ञक अग्नि प्रज्वलित कर गन्ध पुष्पादि से उसकी पूजा कर घी की दो-दो आहुतियाँ लोमभ्यः स्वाहा इत्यादि मन्त्रों से दें—

ॐ लोमभ्यः स्वाहा-स्वाहा इदं लोमभ्यो न मम
ॐ त्वचे स्वाहा-स्वाहा इदं त्वचे नमम
ॐ लोहिताय स्वाहा-स्वाहा इदं लोहिताय नमम।
ॐ मेदोभ्यः स्वाहा-स्वाहा इदं मेदोभ्यः न मम।
ॐ मांसेभ्यः स्वाहा-स्वाहा इदं मासेभ्यो न मम।
ॐ स्नायुभ्यः स्वाहा-स्वाहा इदं स्नायुभ्यो न मम।
ॐ अस्थिभ्यः स्वाहा-स्वाहा इदं अस्थिभ्यः।
ॐ मज्जाभ्यः स्वाहा-स्वाहा इदं मज्जाभ्यः।
ॐ रेतसे स्वाहा-स्वाहा इदं रेतसे॥

तदनन्तर निम्न मन्त्रों से एक-एक आहुति दें—

ॐ पायवे स्वाहा इदं पायवे ० **ॐ आयासाय स्वाहा इदं आयासाय ०**
ॐ प्रायासाय स्वाहा इदं प्रायासाय ० **ॐ संयासाय स्वाहा इदं संयासाय ०**
ॐ वियासास स्वाहा इदं वियासाय ० **ॐ उद्यासाय स्वाहा इदं उद्यासाय ०**
ॐ शुचे स्वाहा इदं शुचे ० **ॐ शोचते स्वाहा इदं शोचते ०**

ॐ शोचमानाय स्वाहा इदं शोचमानाय॰ ॐ शोकाय स्वाहा इदं शोकाय॰
ॐ तपसे स्वाहा इदं तपसे ॰ ॐ तप्यते स्वाहा इदं तप्यते ॰
ॐ तप्यमानाय स्वाहा इदं तप्यमानाय ॰ ॐ तप्ताय स्वाहा इदं तप्ताय ॰
ॐ घर्माय स्वाहा इदं घर्माय ॰ ॐ निष्कृत्यै स्वाहा इदं निष्कृत्यै ॰
ॐ प्रायश्चित्यै स्वाहा इदं प्रायश्चित्यै ॰ ॐ भेषजाय स्वाहा इदं भेषजाय ॰
ॐ यमाय स्वाहा इदं यमाय ॰ ॐ अन्तकाय स्वाहा इदं अन्तकाय ॰
ॐ मृत्यवे स्वाहा इदं मृत्यवे ॰ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इद ब्रह्मणे ॰
ॐ ब्रह्महत्यायै स्वाहा इदं ब्रह्महत्यायै ॰ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॰
इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो ॰ ॐ द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा इदं द्यावापृथिविभ्यो॰

उपर्युक्त आज्य आहुतियाँ देकर शव के हाथ में साधक नामक पिण्ड दें—

ॐ अद्यामुक गोत्र अमुक प्रेत शवहस्ते साधक निमित्तः
प्रेतदैवतो वा एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्

तदनन्तर पुत्रादि कर्मकर्त्ता काष्ठ तृणादि क्रव्याद अग्नि से प्रज्वलित कर शव की प्रदक्षिणा कर सिर और पैर की ओर अग्नि दे और मन्त्र पढ़े—

कृत्वा तु दुष्कृतं कर्म जानता वाप्यजानता।
मृत्युकालवशं प्राप्य नरं पंचत्वमागतम्॥
धर्माधर्म समायुक्तं लोभमोह-समावृतम्।
दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान लोकान् स गच्छतु॥

तदनन्तर प्रार्थना करें—

ॐ त्वं भूतकृत् जगद्योने त्वं लोकपरिपालकः।
उक्तः संहारकः तस्मादेनं स्वर्गं मृतं नय॥

मन्त्र पढ़कर खूब जोर से तीन बार रोए!

शव के आधा जल जाने पर बांस या किसी लकड़ी से कर्मकर्ता शव की कपाल क्रिया (शवमस्तक का छेदन) कर लकड़ी को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें—

(विशेष—कपाल क्रिया से पहले सम्बन्धी पुत्रादि एवं गोत्रज चिता की सात प्रदक्षिणा करें।)

तदनन्तर सभी उपस्थित जन प्रार्थना करें—

प्रार्थना

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।

गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मैश्री गुरवेनम:॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम:॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाघया।

चक्षुर्मिलितं येन तस्मैश्री गुरवे नम:।

ॐ जयन्ति मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे।

सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्॥

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम्।

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलौकेकनाथम्॥

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं, चारुचन्द्रावतंसम्।

रत्नाकल्पो ज्वालाङ्गं परशुमृगभराभीति हस्तं प्रसन्नम्॥

पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणै: व्याघ्रकृतिं वसानम्।

विश्वाद्यं विश्ववीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

ॐ नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नम: शिवाय॥

मन्दाकिनी सलिलचन्दन चर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहु पुष्प सु पूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥
शिवाय गौरिवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥
वसिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥
यक्षस्वरुपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेनसह मोदते॥

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुखभाग्भवेत्॥

ॐ अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः।
अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदोभव॥
अत्र अस्माभिः कृत प्रार्थनया अस्य
जीवस्य सद्गतिः भवतु पूर्व परिवारे च सुखशान्तिः चास्तु॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः॥

अथवा हिन्दी में प्रार्थना करें—

अरदास

प्रथम भगवान को सिमरये वराह जी करें सहाय।

यज्ञपुरुष नर नारायण को ध्याइए, जिस डिठियां सब दुख जाए॥

मच्छ कच्छ को सिमरये श्री नरसिंह रूप बनाय।

श्री बामन हरि का नाम ले, घर आवें नौ निधि धाय॥

श्री रामचन्द्र जी को सिमरये जो प्रकट में करें सहाय।

मुख पुनीत, रसना पवित्र, घट घट रहे समाय॥

दशम अवतार श्री कृष्णचन्द्र भगवान, त्रिलोकी आत्माय

जगत रक्षक, हाजिर-नाजिर, निरंजन, निराकार, ज्योति स्वरूप

अखिल जगत के रक्षपाल, सव थाईं होत सहाय,

सब थाईं होत सहाय। धन्य धन्य श्री गंगा माता

तरन तारनी सब दुख निवारिणी, तेरी महिमा कही न जाय

तेरी महिमा कही न जाय।

चार धाम, चौरासी अड्डे, तीन सौ साठ तीर्थों का ध्यान

धरकर सब बोलो श्रीराम-श्रीराम।

चार खानी, चार बानी, चन्द्र सूर्य पवन पानी

धरती आकाश पाताल तैंतीस करोड़ देवी देवताओं का ध्यान

धरकर सब बोलो श्रीराम-श्रीराम।

ध्रुवभक्त, प्रह्लाद भक्त, राजा हरिश्चन्द्र, राजा बलीचन्द्र

तिनकी कमाई बल ध्यान धरकर सब बोलो श्रीराम-श्रीराम।

हे दीन बन्धु, पतित पावन, दीनानाथ भगवान, सभी उपस्थित

जन समुदाय की विनती है आपकी आज्ञा से इस जीव का इस संसार से

देहावसान हुआ है इसे आप अपने चरणों में स्थान दें

सद्‌गति प्रदान करें तथा शेष परिवार में अपनी कृपा

बनाएं रखें—बोलिए शंकर भगवान की जय।

तदनन्तर स्नानार्थ नदी आदि के तट पर जाएं वहां दक्षिण की ओर मुखकर मौनभाव से स्नान करें परन्तु अंगों को न मलें। इसके बाद दो वस्त्र धारण कर

आचमनकर जल में, पत्थर पर अथवा पवित्र तट पर दक्षिणाग्र तीन कुशाओं पर कुश तिल जल पूर्ण अञ्जलि से अपसव्य होकर (दाएं कंधे पर जनेऊ कर) पितृ तीर्थ (तर्जनी अंगुष्ठ के मध्य भाग) से—

अद्यऽमुक गोत्राऽमुक प्रेत दाह तृषा निवारणार्थ एष

तिलतोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पढ़कर दाहतृषा के निवारण के लिए एक-एक या 13-13 अंजलियां दे। तदनन्तर पीपल के मूल में प्रेत की दाह तृषा निवारण के लिए घड़े को जल से भरकर उसमें तिल, पुष्प, दूध छोड़कर दान करना चाहिए—

अद्यामुक गोत्राऽमुक प्रेत एष तिल तोय दुग्ध सहित

घटः अद्यदिनादारभ्य दश दिन पर्यन्तमश्वत्थमूले ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

इसके पश्चात् बिना पीछे देखे ईश्वर स्मरण करते हुए गांव को लौटे और घर के पास पहुंचकर नीम के पत्ते चबा कर आचमन कर गोबर, अग्नि आदि का स्पर्श कर घर में प्रवेश करे। वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध शोकार्त के शोक को (संसार की निस्सारता बखान कर) दूर करें।

तृणच्छेदन मन्त्र

यत एषागतः प्रेतस्तत्रैव प्रति गच्छति।
त्वया शोको न कर्तव्यः यत्रत्यस्तत्र गच्छति॥

क्रियाकर्म करने वालों को निम्न नियमों का पालन करना चाहिए— ब्रह्मचर्य से रहे, नीचे बैठे और नीचे सोये, किसी पतित अथवा अशुद्ध का स्पर्श न करे, दान अध्ययनादि न करे, सब भोगों का परित्याग कर प्रेतक्रिया को छोड़कर और कुछ न करें। रात्रि में भोजन न करें दिन में ही एक बार आहार ले। इच्छा हो तो चौराहे, श्मशान अथवा घर में प्रेत के लिए दीप दान करना चाहिए।

सूर्यास्त से अर्धरात्रि पर्यन्त अन्तरिक्ष में दूध-जल दान करे इसके लिए त्रिकाष्ठिका में एक मिट्टी के पात्र में जल, दूसरे में दूध भरकर दक्षिण की ओर मुखकर—

अमुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य आप्यायानार्थं तापोपशमनार्थं च आकाशे मृण्मये पात्रे क्षीरोदकयोः निधानमहं करिष्ये।

संकल्प करके—

ॐ श्मशानानल दग्धोसि परित्यक्तोसि बांधवैः।

इदं नीरमिदं क्षीरमत्र स्नाहि इदं पिब॥

इस प्रकार एक, तीन, या दस रात तक रात्रि में करना चाहिए।

अथ पंचक विधानम्

यदि व्यक्ति की मृत्यु धनिष्ठादि पंचको (धनिष्ठा उतरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा, रेवति नक्षत्रों में अर्थात् कुम्भ, मीन के चन्द्र में) में हो तो पंचक शान्ति आवश्यक है अन्यथा परिवार के अन्य व्यक्ति की मृत्यु निश्चय ही हो जाती है। पंचक शान्ति के लिए कुश के पांच पुतले बनाकर ऊनी धागा लपेट कर जौ के आटे से उन्हें पोतकर एक शव के सिर पर, दो कोख में, एक नाभि में तथा एक पांवों के बीच रखकर कर्मकर्ता स्वयं शव के सिरहाने दक्षिणाभिमुख बैठ कर अपसव्य होकर अग्नि जलाकर देशकाल का संकीर्तन कर—

अमुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य धनिष्ठादि पचक जनित दुर्मरण सूचित वंशारिष्ट विनाशार्थं पंचक विधानं करिष्ये—

घी की आहुति दे—

ॐ प्रेतवाहाय स्वाहा, ऊं प्रेत सखाय स्वाहा
ॐ प्रेताधिपाय स्वाहा, ऊं प्रेत भूमिपाय स्वाहा

ॐ प्रेत हर्त्रे स्वाहा।

धनिष्ठा नक्षत्रस्य आहुति—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा
कामधुक्षः स्वाहा॥ 1॥

शतभिषा मन्त्र—

ॐ वरुणस्योतंभनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो
वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि
वरुणस्य ऋत सदनमासीद स्वाहा॥ 2॥

पूर्वाभाद्रपदा मन्त्र—

ॐ इत नो हिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽएकपात्पृथिवीं समुद्रः
विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवाना स्तुता मंत्रा कविशस्ता अवन्तु स्वाहा॥ 3॥

उत्तराभाद्रपदा मन्त्र—

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽस्तुमा माहि ँ सी। निवर्तयाम्यायुषेनाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय स्वाहा ॥ 4 ॥

रेवति मन्त्र—

ॐ पूषन्तव व्रते वयन्नरिष्येम कदाचन।

स्तोतारस्त इहस्मसि स्वाहा ॥

ॐ प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु उग्रावः।

सन्तु वाहवो ना धृष्या यथासथ स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्रों से घी की आहुति देकर उन कुशा के पुतलों के साथ शव को दाह विधि से जला दें। उसके बाद (पातक) की समाप्ति के पश्चात् पंचक शान्ति करनी चाहिए।

अस्थि संचयनम्

अस्थि संचय निमित्त सामग्री एकत्रित कर श्मशान में जाकर स्नान कर भू शोधनकर (गोबर से लीप कर) चावल बना तदनन्तर दीप प्रज्वलित कर पवित्र *(कुशाऐं) धारण कर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन प्राणायाम करके—

ॐ पवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥

इससे अपने पर तथा श्राद्ध सामग्री पर कुशा से जल छिड़के तदनन्तर विनियोग करें—

ॐ पृथिवीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः

पृथिवी पर फूल अक्षत चढ़ाऐं—

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

---

* दाएं हाथ में 2, बाएं में 3, शिखा, आसन के नीचे, कटि प्रदेश तथा यज्ञोपवीत में एक एक कुश धारण करें।

त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

पृथिव्यै नमः।

फिर धूप और दीप की पूजा करने के पश्चात् प्रतिज्ञा संकल्प करे— देशकाल का संकीर्तन कर—

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्ति पूर्वक

सद्गति प्राप्त्यर्थं अस्थि संचय निमित्तकं श्राद्धं करिष्ये।

पुनः अपसव्य हो, दक्षिणाभिमुख, वायां घुटना मोड़ कर दाऐं हाथ में मोटक जल तिल लेकर—

अद्यामुक गोत्र, अमुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक एकोद्दिष्ट श्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

प्रेत के लिए कुशासन प्रस्तुत करें।

फिर तिल लेकर—

ॐ अपहता असुरा रक्षा ँ सि वेदिषदः।

मन्त्र से प्रेतासन पर तिल डाले तथा आवाहन करे—

इह लोकं परित्यज्य गतोसि परमां गतिम्।

मनसा वायुरुपेण चटे त्वामहं निमन्त्रये॥ 1॥

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वाताः पथिभिर्देवयानैः॥

अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदन्तोऽधिव्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ 2॥

तदनन्तर आटे या पत्तल से बना दोना ले उसमें दक्षिणाग्र एक कुशा रखकर

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शंय्योरभिस्रवन्तु नः।

मन्त्र से जल डालकर फिर—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।

पृत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृन् लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।

इससे तिल डालकर गन्ध पुष्प डालें।

तब अर्घपात्र को बाएं हाथ पर रख, कुशा उठा कर भोजनपात्र पर रख कुछ उदकान्तर दें, दाएं हाथ से ढांपे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्वभूवुर्या अन्तरिक्षाः उत पार्थवीर्य्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः स ँ स्योनाः सुहवा भवन्तु।

पढ़कर दाएं हाथ में जल लेकर—

अद्यामुक गोत्र अमुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक एकोद्दिष्ट

श्राद्धे एष ते हस्तार्घो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

इससे अर्घ पवित्र पर दें, अर्घपात्र को प्रेतासन के वाम भाग में उल्टा रख दे। (ॐ प्रेत स्थानमसि)

तदनन्तर गन्धादि देकर संकल्प करे—

अमुक गोत्र अमुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक एकोद्दिष्ट श्राद्धे एतानि गन्ध, पुष्प, धूप, दीप ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

फिर सव्य हो, जलले मण्डल बनावे—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।

एवं मण्डलतोयं वै सर्वभूतानि रक्षतु॥

तब पुनः अपसव्य होकर

ॐ इदमन्नमेतद् भू स्वामि पितृभ्यो नमः।

पढ़कर थोड़ा-सा अन्न कुश पर छोड़े।

फिर अन्न पर मधु (शहद) डालें—

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।

मधुनक्तमुतोषसो मधु मत् पार्थिव ँ रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता॥

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु मां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

तदनन्तर हाथों को नीचे की ओर कर—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतेऽमृतं

जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिधे पदम्।

समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा। ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

पढ़कर अंगूठे से स्पर्श करे—

ॐ इदमन्नम्, ॐ इमा आपः, ॐ इदमाज्यम्, ॐ इदं हविः, फिर—अपहता असुरा रक्षा ँ सि वेदिषदः।

मन्त्र से तिल अन्न पर डाले। फिर जल कुशादि लेकर—

अद्यामुक गोत्र अमुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक एकोद्दिष्ट

श्राद्धे इदमन्नं घृताद्युपस्कर सहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

जल छोड़ कर सव्य होकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें। नारायण का ध्यान करें।

ॐ नमस्तुभ्यं विरुपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे।

नमः पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः॥

फिर अपसव्य होकर पिण्डदानार्थ वेदी पर कुशा से सात रेखाऐं— ॐ अपहता असुरा रक्षा ँ सि वेदिषदः।

मन्त्र से अथवा—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काची अवन्तिका।

पुरी द्वारावति ज्ञेया सप्तैते मोक्षदायिका:॥

मन्त्र से खींच कर कुशा को उत्तर की ओर फेंक दे तब जलती हुई कुशा या लकड़ी लेकर

ॐ ये रुपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधयाचरन्ति।

परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्ठांल्लोकान् प्रणुदात्वस्मात्॥

मन्त्र से रेखाओं पर धुमाकर दक्षिण की ओर फेंक दे।

रेखाओं पर जड़ रहित तीन कुशाओं को बिछाकर जल, तिल, गन्ध पुष्प लेकर—

अमुक गोत्रः अमुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक एकोद्दिष्ट

श्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावनेजनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥

से अवनेजन दे।

फिर घी, मधु, तिल युक्त पिण्ड हाथ में लेकर—

अमुकगोत्र अमुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक एकोद्दिष्ट श्राद्धे एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड देकर हाथ साफ कर—

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वम्।

पढ़कर उत्तराभिमुख होकर तीन सांस खीचकर

ॐ अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषायिषत

पढ़कर श्वास पिण्ड के ऊपर छोड़ दे।

फिर गन्ध पुष्प तिल जल लेकर—

अमुक गोत्रामुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक एकोद्दिष्ट श्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

इससे पिण्ड पर प्रत्यवनेजन दे।

तब नींवी की गांठ खोलकर सव्य होकर हरि का स्मरण कर पुनः अपसव्य होकर दोनों हाथों से सफेद वस्त्र या सूत्र

ॐ नमस्ते पिता रसाय। नमस्ते पिता शोषाय।

नमस्ते पिता जीवाय। नमस्ते पिता स्वधायै।

नमस्ते पिता घोराय। नमस्ते पिता मन्यवे।

नमस्ते पिता पिता नमस्ते गृहान्नो पिता दत्तसतस्ते

पिता द्वेष्म एतत्ते पिता वासः।

मन्त्र से पिण्ड पर रखकर जल तिल लेकर

अमुक गोत्रामुक प्रेत अस्थि संचय निमित्तक

एकोद्दिष्टश्राद्धे पिण्डोपरि एतत् बासो ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

जल छोड़ दे। इसके बाद मौन भाव से गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्यादि समर्पित करें।

अमुक गोत्रामुक प्रेतात्रपिण्डे गन्ध, पुष्प, धूप दीप पूगीफल दक्षिणादीनि ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

फिर—

'ॐ शिवा आपः सन्तु'	**इससे जल चढ़ाऐं।**
'ॐ सौमनस्यमस्तु'	**इससे पुष्प चढ़ाऐं।**
'ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु'	**इससे अक्षत (चावल) चढ़ाऐं।**

तब जल लेकर—

अमुकगोत्रामुक प्रेत अस्थिसंचय निमित्तक एकोद्दिष्टश्राद्धे यद्दत्तमन्न पानादिकं तदक्षयमुपतिष्ठताम्।

पढ़कर जल छोड़े। तदनन्तर सव्य होकर पूर्वाभिमुख दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए—

'ॐ अघोरः पिता अस्तु'

दो बार पढ़ कर पिण्ड पर जल की धारा चढ़ाऐं। उसके बाद हाथ जोड़कर—

ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां, दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्,

वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो माव्यगमद्, बहुदेयञ्च

नोऽस्तु अन्नञ्च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि,

याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन एताः

सत्या आशिषः सन्तु।

आशीर्वाद मांगे— तत्पश्चात् अपसव्य होकर कुशत्रय पिण्ड पर रख दूध और जलधारा दे—

ॐ ऊर्जंवहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परि स्रुतं स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्।

झुक कर पिण्ड को सूंघकर उठा ले एवं पिण्डाधार (पिण्ड के नीचे रखी हुई) कुशाओं को अग्नि में डाल दें। सव्य हो आचमन कर विष्णु का स्मरण करे—

ॐ अनादि निधनो देवः शंखचक्रगदाधरः।

अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदोभव॥

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।

स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

फिर अष्टांग बलि तैयार करें— अष्टांग बलि में दूध, जल, फल, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, चावल आदि पत्तों पर बलियां सजाकर दिशाओं में (चार, आठ या दस की संख्या में) रखकर—

'ॐ क्रव्याद मुखेभ्यो देवेभ्यो नमः'

इस मन्त्र से श्मशानवासी देवताओं की गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजा करे उसके बाद बलिदान करें—

येऽस्मिन् श्मशाने देवाः स्युःभगवंतः सनातनाः।

तेऽस्मत्सकाशात् गृह्णन्तु बलिमष्टांगमक्षयम्॥ 1॥

प्रेतस्यास्य शुभान् लोकान् प्रयच्छन्तु च शाश्वतान्।

अस्माकमायुरारोग्यं सुखं च ददतां चिरम्॥

पढ़कर पूर्वादि क्रम से दिशाओं में श्मशानवासी शकरादि देवताओं को समर्पित करे।

ऐषोऽष्टांग वलिः शंकरादि-श्मशानवासि देवताभ्यो नमः।

तत्पश्चात् दूध, जल, अथवा पंचगव्य चिता पर छिड़क कर शमी या ढाक (पलाश) की टहनी से अनामिका ओर अंगूठे से पहले सिर की हड्डी ले फिर छाती हाथ, बगल और पांव की हड्डियां ले कुछ अस्थियों को पंचगव्य और गंगाजल से स्नान करा कर गन्धादि से पूजन कर पलाश के पत्तों के दोने में रख, मिट्टी के नए पात्र में रखकर चिता स्थान से 15 पद उत्तर की ओर चलकर जमीन में गाड़ दे उसके बाद अष्टवलियों पर चावल छिड़क शंकरादि देवताओं को विसर्जित करे। ''**शंकरादि देवता स्वीयं स्वीयं स्थान गच्छन्तु''—इति।** चितास्थान पर एक पत्थर (शिवलिंग स्वरूप) स्थापित कर उसकी गन्ध पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य,जलपूर्ण कुम्भ से विधिवत्-पूजन कर प्रार्थनाकर नमस्कार करें और स्वयंबन्धुओं सहित वस्त्रसहित स्नान कर घर् लौटे।

फिर यथावकाश (दस दिनों के भीतर अधिक श्रेष्ठ है अन्यथा गुरु शुक्रास्त आदि का विचार कर दस दिन के भीतर कोई विचार नहीं) गंगादि तीर्थों में जाकर अस्थियों को पंचगव्यादि से स्नान करा कर पूजन कर दक्षिण की ओर देखता हुआ।

''ॐ नमोऽस्तु धर्मराजाय पितुः प्रेतत्वमुक्तये।

स मे प्रीतः शुभं दद्यादस्मिन् लोके परत्र च॥''

पढ़ कर गंगा में विसर्जित करे और स्वयं स्नान कर सूर्य के दर्शन कर प्रणाम करें।

अथ दशगात्र विधि :

कर्म कर्ता स्नानकर, शुद्ध वस्त्र पहन, चावल पका, तिलतैल का दीपक जला कर—

द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते, त्रीणि वामे कुशत्रयम्।

शिखायां पादमूले च सकृत् यज्ञोपवीतके॥

पवित्रे धारणकर वेदी बनाकर

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काँची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैताः मोक्षदायिकाः॥

इससे प्रोक्षणकर दक्षिणाभिमुख एवं अपसव्य हो, छिन्नमूल दक्षिणाग्रकुशाएँ फैलाकर, आचमनकर तथा प्राणायाम कर कुशत्रय तिलजल लेकर—

देशकालौ संकीर्त्य-अमुकगोत्रामुक प्रेतस्य प्रथमे अहनि शिरो निष्पत्यर्थम् अवयव श्राद्धं करिष्ये

संकल्प कर जल तिल गन्धपुष्प लेकर—

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत शिर पूरक प्रथम पिण्ड स्थाने

अत्रावनेजनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड वेदी पर तीन कुशाओं पर अवनेजन देकर तिल, घृत, मधु, दूध युक्त पिण्ड लेकर—

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत शिरः पूरक एषः प्रथमः पिण्डो

मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

कुशाओं के ऊपर पिण्ड रख दें। तदनन्तर जल तिल गन्धपुष्प लेकर प्रत्यवनेजन दे—

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत शिरः पूरक प्रथम पिण्डे अत्र

प्रत्यवनेजनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड के ऊपर चढ़ा दें।

फिर मौन भाव से ऊनी धागा, गन्धपुष्प, धूप, दीप नैवेद्य ताम्बूल पूगीफल आदि सब सामग्री पिण्ड पर चढ़ाए और जल लेकर—

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत शिरः पूरकपिण्डे एतानि ऊर्णासूत्र
गन्ध पुष्प, धूप दीप ताम्बूलादीनि मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्॥

फिर—

'अर्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु'।

यह कह कर जल दूध, तिल गन्ध फूलादि लेकर

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत दाहजनित तृषोपशमनार्थं
एष तिल तोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

फिर तिलजल लेकर—

अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत एतत्ते तिलतोय पूर्णपात्रं
पिण्डोपरि मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अवशिष्ट जलधारा पिण्ड पर दें। फिर पिण्ड उठाकर वेदी पर दक्षिणाग्र तीन कुशाऐं रख, उन पर तीन पुटकों में जल, दूध और फूल रख, दीप जलाकर तिल डाल कर जल लेकर—

अद्यामुक गोत्रमुक प्रेत शिरः पूरक पिण्डस्थाने स्नानार्थ
इदं नीरं, पानार्थमिदं क्षीरं घ्राणार्थमिमानि माल्यानि
तिमिर निवारणार्थमेषः प्रदीपः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठताम्।

जल छोड़े, फिर पहला पुटक उठा कर—

'अनेन नीरेण त्वमत्र स्नाहि।'

कुशाओं पर जल उत्सर्जन करें। द्वितीय पुटक लेकर—

'इदं क्षीरं त्वमत्र पिव।'

कुशाओं पर दूध डालें। तृतीय पुटक लेकर—

'इमानि माल्यानि त्वमत्र परिधेहि।'

फूल चढ़ाए फिर अंगूठे से निर्दिष्ट करे—

'अनेन दीपेन त्वं यममार्गं पश्य।'

उसके बाद सव्य हो पूर्वाभिमुख हो प्रेत की मुक्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करें—

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णंस्यादिति श्रुतिः॥
मंत्रतः तंत्रतः छिद्रं देश कालार्हवस्तुतः।
सर्वं करोतु निश्छिद्रं नाम संकीर्तनं हरेः॥
नाम संकीर्तनं यस्य सर्व पाप प्रणाशनम्।
प्रणामो दुखशमनं तं नमामि हरिं परम्॥
अतसी पुष्प संकाशं पीतवाससमच्युतम्।
ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम्॥
कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव।
संसारार्णवमग्नानां त्राताभव जनार्दनः॥
अनादि निधनो देवः शंख चक्रगदाधरः।
अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्ष प्रदोभव॥

इस प्रकार प्रार्थना करे—

काकोसि यमदूतोसि गृहाण वलिमुत्तमम्।
यमद्वारे गते प्रेते तमाप्यायितुमर्हसि॥

कौवे को बलि दे। पिंड को जल में विसर्जित करें या गौ को खिला दें फिर स्नान कर घर आए, गोग्रास दें और ब्राह्मण भोजन दें।

इसी प्रकार दस दिन तक पिण्ड देने के साथ-साथ तिलजलांजलि तथा तिलजल पात्र दें।

दूसरे दिन के पिण्ड के लिए संकल्प इस प्रकार करें—

अमुक गोत्रामुक प्रेत कर्णाक्षि नासिका पूरको द्वितीय पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत द्वितीय दिने द्वे तिल तोयांजली ते मया दीयेते तवोपतिष्ठेताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत द्वितीये दिने द्वे तिलतोय पात्रे
ते मया दीयेते तवोपतिष्ठेताम्।

तीसरे दिन के पिण्डार्थ—

अमुक गोत्रामुक प्रेत गलांस भुजवक्षः पूरकः तृतीयपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत त्रयस्तिल तोयांजलयस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत त्रीणि तिलतोय पात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

चतुर्थ दिन के लिए—

अमुक गोत्रामुक प्रेत नाभि, लिंग, गुद पूरकश्चतुर्थ पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत चत्वारस्तिल तोयांजलयस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत चत्वारि तिल तोय पात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

पंचम दिन के लिए—

अमुक गोत्रामुक प्रेत जानु जंघा पाद पूरकः पंचम पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत पंच तिल तोयाञ्जलयस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत पंचतिलतोय पात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

छठे दिन के पिण्ड के लिए—

अमुक गोत्रामुक प्रेत सर्वमर्म पूरक षष्ठः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अमुकगोत्रामुक प्रेत षट्तिल तोयाञ्जलयस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत षट् तिल तोय पात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

सप्तम दिन में—

अमुक गोत्रामुक प्रेत सर्वनाड़ी पूरकः सप्तम पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। अमुक गोत्रामुक प्रेत सप्ततिल तोयाञ्जलयस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत सप्ततिल तोय पात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अष्टम दिन के कृत्य में—

अमुक गोत्रामुक प्रेत लोमादि पूरको अष्टमः पिण्डस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत अष्टौ तिल तोयाञ्जलयस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत अष्टौ तिल तोयपात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्

नवम दिन—

अमुक गोत्रामुक प्रेत वीर्यपूरको नवमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत नवतिल तोयांजलस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत नव तिल तोय पात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

दसवें दिन में—

अमुक गोत्रामुक प्रेत क्षुत्-पिपासा पूरको दशमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत दश तिल तोयाञ्जलयस्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

अमुक गोत्रामुक प्रेत दशतिल तोयपात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

शेष सभी कृत्य जल, दूध, पुष्प, दीपादि का दान एवं भगवत्प्रार्थना प्रथम दिन के कृत्य के समान ही करें।

एकादशाह—

स्नानकर नवीन यज्ञोपवीत शुद्ध वस्त्र धारणकर गोबर द्वारा लिपी हुई भूमि पर तिल बिखेर कर रक्षादीप जलाकर कुशधारण, आत्मसिंचन आचमनपूर्वक संकल्प करें—

अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्ति पूर्वक पितृसमत्व प्राप्त्यर्थं आद्य मासिक त्रैपक्षिक, द्वितीयमासिक, तृतीय चतुर्थ पंचम ऊनषाण्मासिक, षण्मासिक, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, ऊनाब्दिक, द्वादश मासिकानि स्वकाल कर्तव्यानि षोडश श्राद्धानि सपिण्डीकरणाधिकार सिद्ध्यर्थं एकादशे अहन्यपकृष्य एकोद्दिष्ट विधिना करिष्ये—*

जनेऊ अपसव्यकर जललेकर—

ॐ अद्यामुक गोत्रामुक प्रेत आद्यश्राद्धमारभ्य द्वादशमासिक श्राद्ध पर्यन्तं

* यहाँ एकोद्दिष्ट विधि मन्त्रसहित 'अस्थिसंचय' पृष्ठ 20 से 25 में निर्दिष्ट है, मासिक एकोद्दिष्ट श्राद्धों में भी इसी विधि के अनुसार करें, वहाँ 'एकोद्दिष्टविधिना अमुक मासिक श्राद्धमहं करिष्ये' एवं प्रेत शब्द के स्थान पर 'पित्तर' तथा 'तवापतिष्ठताम्' वाक्य के स्थान पर 'तस्मै ते स्वधा' वाक्य का प्रयोग करें।

इमानि आसनानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।आसन दें। इस प्रकार शेष सब क्रिया पूर्ववत् करते हुए सोलह पिण्डदान कर अन्त में सान्नोदक कुम्भदान करें— **अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य आद्य श्राद्ध निमित्तक इदं सान्नोदकं कुम्भं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। फिर दान प्रतिष्ठा कर**

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषुयत्।

स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।

कर्म पूर्ति के लिए हरि का स्मरण करें।

सपिण्डन श्राद्ध प्रयोग—

कर्म कर्ता स्नान कर पूर्वाभिमुख बैठ आचमन, प्राणायामादि कर घी की दीपक जला कर पवित्री धारण कर, आत्मसिंचन कर श्वेत सरसों बिखेरने के बाद प्रतिज्ञा संकल्प करें—

देशकालौ संकीर्त्य ॐ अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्तये उत्तम लोक प्राप्त्यर्थं अमुक गोत्रैः अमुकप्रेतस्य पितृ पितामह प्रपितामहैरहमुकामुक शर्मभिः वसु रुद्रादित्य स्वरुपैः सह एकोद्दिष्ट पार्वणोभयात्मकं सपिण्डीकरणश्राद्धं करिष्ये, इति।

स्त्री प्रेत के लिए प्रतिज्ञा संकल्प—

ॐ अमुक गोत्रायाः अमुकी प्रेतायाः प्रेतत्व निवृत्तिपूर्वक उत्तम लोक प्राप्त्यर्थं अमुक गोत्राभिः अस्मत् पितामही प्रपितामही वृद्ध प्रपितामहीभिः गंगा यमुना सरस्वती स्वरूपाभिः सह सपिण्डीकरणं श्राद्धं करिष्ये इति।

फिर तीन बार गायत्री जापकर जल यव कुश लेकर—

ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्धनिमित्तक अमुक गोत्राणां पितामह, प्रपितामह, वृद्धप्रपितामहानां अमुकामुक शर्मणां सपिण्डीकरण श्राद्ध सम्बन्धि काल काम संज्ञिकानां विश्वेषां देवानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः।

ॐ विश्वे देवा सऽआगत शृणुताम इमꣳहवम्। एदं वर्हिर्निषीदत॥

विश्वेदेवो का आवाहन कर, पूर्वविधि पूर्वक जनेऊ सव्य में ही विश्वेदेवो को अर्ध्य प्रदान करे तथा गन्ध पुष्पादि प्रदान करें विश्वेदेवो के लिए सर्वत्र संकल्प के अन्त में स्वाहा नमः का प्रयोग करें।

फिर अपसव्य कर तिल जल लेकर—

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्धे इदमासनमुपतिष्ठताम्।

प्रेत के लिए आसन दे (इसी प्रकार प्रेत के लिए सब क्रियाओं में 'उपतिष्ठताम्' शब्द का प्रयोग करे।)

तदनन्तर तिल जल लेकर—

अद्यामुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्धनिमित्तक अमुक गोत्राः पितामह प्रपितामह बृद्धप्रपितामहाः अमुकामुक शर्माणः सपिण्डीकरण श्राद्धे इमानि आसनानि (त्रेधा विभज्य) वः स्वधा। पितरों के लिए आसन दें (पितरों के लिए सव क्रियाओं में 'स्वधा' का उच्चारण करें।)

शेष सब क्रियाओं को पूर्व विधि अनुसार करे अर्घ्य, गन्ध पुष्पादि दान कर तथा पिण्डदान के पश्चात् सुवर्ण, रजत कुशादि लेकर प्रेतपिण्ड के निम्न मन्त्र पढ़ते हुए तीन भाग कर दे—

ॐ ये समानाः सुमनसः पितरो यमराज्ये।

तेषां लोकः स्वधानमो यज्ञो दैवेषुकल्पताम्॥ 1॥

ॐ ये समानाः सुमनसो जीवा जीवेषु मामकाः।

तेषां॑ श्रीमयि कल्पतामस्मिल्लोके शत॑समाः॥ 2॥

फिर प्रेतपिण्ड का पहला भाग लेकर—

ॐ अमुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रथमपिण्ड शकलं अमुक गोत्रस्य पितामहस्यामुक शर्मणः वसुरुपस्य पिण्डेन सह संयोजयिष्ये॥

पितामह के पिण्ड से मेलन करे इसी प्रकार दूसरे भाग का रुद्र रूप प्रपितामह के पिण्ड से और तीसरे भाग का आदित्य रूप वृद्धप्रपितामह के पिण्ड से मेलन करे। तदनन्तर तीनों पिण्डों पर अक्षयोदक दे, पुष्प अक्षत जलादि चढ़ाए और पूर्वाग्रा जल धारा दे फिर हाथ जोड़ कर पूर्वाभिमुख बैठ **'ॐ गोत्रं नो वद्‌र्धताम्'** इत्यादि मन्त्र से आशीर्वाद माँगे। तदनन्तर अपसव्य हो दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणाग्र कुशा पिण्डों पर रख **'ॐ उर्जं बहन्ती'** इत्यादि मंत्र से जल धारा एवं दुग्ध धारा दे फिर पिण्डों को सूंघ कर उठा ले और पिण्डाधार कुशाओं को अग्नि में डाल दे। सव्य होकर विश्वेदेव के अर्घ्यपात्र को हिलाए और अपसव्य से पितरों के पात्रों को सीधे कर विसर्जन कर दक्षिणा ब्राह्मण को देकर विष्णु का स्मरण करते हुए कार्य पूर्ति करे (तदनन्तर किसी भी कार्य में मृतक के लिए 'प्रेत' शब्द का प्रयोग न करे, 'पितृ' शब्द का उच्चारण करें।)

अथ शय्यादानम्

ॐ अद्याशौचान्त द्वितीयेह्नि अमुक गोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य स्वर्गकामः शय्यादानं करिष्ये।

ॐ इमां सोपकरणां शय्यां ददामीति।

ॐ सोपकरणशय्यायै नमः। शय्या का पूजन कर

ॐ अद्यैकादशेऽह्नि अमुक गोत्रस्य पितुरमुक प्रेतस्य परलोके सुख शयनार्थं स्वर्गलोक प्राप्तयर्थमिमां सोपस्करां शय्यां विष्णुदैवतत्यामुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

ॐ अद्य कृतैतत्सोपकरणशैय्यादान कर्मणाः प्रतिष्ठा सिद्धयर्थमिदं हिरण्यमग्नि दैवतममुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

ॐ यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया।
शय्या ममाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि॥

इति पठित्वा प्रणम्य विसृजेत्। इति शैय्यादानम्।

अथ कपिला दानम्

तत्रादौ पुण्यदेशे यथोक्तलक्षणवतीं गाँ प्राङ्मुखीमवस्थाप्य, यथोक्तलक्षणं सत्पात्रं तदभावे अनिषिद्धं ब्राह्मणं उपवेश्य। स्वयं गोपुच्छदेशे प्राङ्मुख उपविश्य, सव्येन आचम्य, प्राणानायम्य, कुशत्रय-तिलजलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य।

ॐ अमुक गोत्रस्यास्मत्पितुरमुकशर्मणः स्वर्गलोक प्राप्तिकामो गोदानमहं करष्ये।

तदंगतया गोब्राह्मणस्य च पूजनं करिष्ये।

इति संकल्प्य ब्राह्मण पाद्यादिभिः संपूज्य हस्ते पुष्प चन्दनं ताम्बूलवासांस्यादाय।

ॐ अद्य-करिष्यमाणोगोदानार्थं त्वामहं वृणे।

इति वृणुयात्। ॐ वृतोस्मीति प्रतिवचनम्।

अथ गो पूजाक्रमः।

आवाहयाम्यहं देवीं त्रैलोक्यस्य च मातरम्।

यस्याः शरणामाविष्टः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

इत्यावाहनं

त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुंधरा।

सावित्री त्वं च गायत्री गंगा त्वं च सरस्वती॥

तृणानि भक्षसे नित्यं अमृतं स्रवसे प्रभो।

भूत-प्रेत-पिशाचांश्च पितृ-दैवत-मानुषान्।

सर्वांस्तारयसे देवि नरकात् पापसंकटात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वर्धेनो इहागच्छ इह तिष्ठ।

इति प्रतिष्ठापनम्। ततः

सर्वदेवप्रियं देवि चन्दनं मलयोद्भवम्।

कस्तूरिकुंकुमाढ्यं च गौ गन्धं प्रतिगृह्यताम्॥

इतिगन्धः।

ऐरावतकुले जाता शतक्रतुप्रिया सदा।

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता॥

धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।

इति पुष्पाणि। अथाँग पूजा।

ॐ आस्याय नमः, ॐ शृंगाभ्यां नमः, ॐ पृष्ठाय नमः, ॐ पुच्छाय नमः, ॐ पूर्वपद्भ्यां नमः, ॐ पश्चिम पद्भ्यां नमः।

फिर अंग पूजा करे, पहले मुँह, सींग, कमर, पूंछ सामने और पीछे के चारों पाँवों का स्पर्श कर ॐ वनस्पति इस मन्त्र से धूप दिखाएं।

ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।

इति धूपः।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण सुरभे मया दत्तं हि भक्तितः।

इति दीपम्।

वैष्णवि सुरभि मातः नित्यं विष्णुपदे स्थिते।

नैवेद्य हि मया दत्तं गृह्यतां पापहारिणे॥

इति नैवेद्यम्।

आच्छादनं च कौशेयं शुद्ध चैव सुनिर्मलम्।

सुरभ्यै दीयमानं तु प्रीयतां केशवः स्वयम्।

इति वस्त्रम्।

यत्ते मयार्पितं शुद्धं घंटं चामरमण्डितम्।

सुरभे तद् गृहाणेदं मुनित्रिदशवन्दितम्॥

इति घण्टाचामरं। ततः गन्धादिभिः संपूज्य, प्रदक्षिणां कृत्वा, उदङ्मुखो गोपुच्छं गृहीत्वा, कुशत्रय-यव-तिल-जलैः तर्पणं कुर्य्यात्।

ॐ देवासुरास्तथा यक्षा नाग-गन्धर्वराक्षसाः।

पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कुष्माण्डास्तरवः खगाः॥

जलेचरा भूमिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।

प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता, मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः। वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता भृत्यास्तथैंवाश्रितेसेविकाश्च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।

इति तर्पणं कृत्वा।

ॐ या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता।

धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।

गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

इति प्रार्थ्य। गोपुच्छं, कुशत्रय, तिल-जलानि चादाय, देशकालौ संकीर्त्य।

ॐ अमुकगोत्रस्य अस्मत् पितुरमुक शर्मणः स्वर्गकाम इमां गां सवत्सां सुपूजितां, पयस्विनीं, सुवर्णशृङ्गी, रौप्यखुरां, ताम्रपृष्ठीं, वस्त्रयुगाच्छन्नां, कांस्यपानीयपात्राम्, पैत्तिल-दोहनपात्रां, रुद्रदैवाताममुक गोत्रायामुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

इति संकल्प गोपुच्छं साक्षात् कुशोदकं विप्रहस्ते दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततः।

यज्ञसाधनभूता त्वं विश्वस्याघप्रणाशिनी।

विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा॥

इति प्रार्थ्य, दक्षिणाद्रव्यादिकमादाय—

ॐ अद्य कृतैतद् गोदानप्रतिष्ठार्थमिमं हिरण्यमग्नि दैवतममुक गोत्रायामुक शर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्य महं सम्प्रददे।

इति दक्षिणां दद्यात्। ततः प्रतिगृहीता ॐ स्वस्तीत्युक्त्वा—

कोदात्कस्मादादिति कामस्तुति पठेत्।

स्तुति पठेत्। ततो दाता अनेन कर्मणा श्रीनारायणः प्रीयताम् इति पठित्वा, विप्रं विसृज्य कर्मपूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत्। इति गोदान विधिः।

त्रयोदश पददानम् तत्र आसनं 1, उपानहौ 2, छत्र 3, मुद्रिका 4, कमण्डलु 5, अन्नं 6, जलं 7, भाजनानि 8, वस्त्राणि 9, आज्यं 10, यज्ञोपवीतं 11, यष्टि 12, ताम्बूलं च 13, इमानि त्रयोदशानि पददान-द्रव्याणि यथाशक्ति सम्पाद्य कुशत्रय-तिल-जलान्यादाय, देशकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन)।

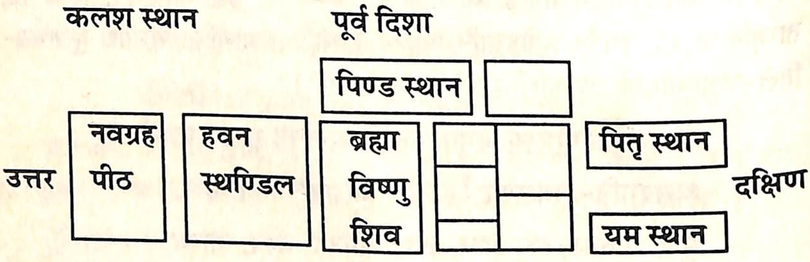
ॐ अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य परलोके सुखप्राप्त्यर्थ
असद्गति-निवारणार्थं इमानि-आसनोपानहौ, छत्रं,
मुद्रिका कमण्डलु अन्न, जल, भोजन, वस्त्र, आज्य,
यज्ञोपवीत, ताम्बूलानि त्रयोदश पदानि नाना
दैवतानि, नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमह-
मुत्सृजे। प्रेताय उपतिष्ठन्तां एभिस्त्रयोदशपददानैरमुक
प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिः सद्गतिप्राप्तिश्चास्तु।

इति पठेत्। इति त्रयोदशपददानम्।

धर्मशान्ति प्रकरण

धर्मशान्ति महापुण्या सर्वपाप विनाशिनी।
पितरः स्वर्ग गच्छन्ति धर्मशान्ति प्रभावतः॥
श्रेष्ठा सप्तदशाहे सा मध्या षाण्मासिके तथा।
निकृष्टा वर्षमध्ये तु ततः ऊर्द्ध न कारयेत्॥
कार्तिकादि शुभे मासे उतरायणगे रवौ।
शुक्लपक्षेऽथवा कृष्णे द्वादशादि शुभे तिथौ॥
ब्राह्मणं च समाहूय विधिज्ञं शुभलक्षणम्।
मुनिप्रणीत विधिना धर्मशान्तिं च कारयेत्॥

धर्मशान्ति में वेदी निर्माण—



धर्म शान्ति

पवित्रधारणम् : **ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥**

वैष्णवाचमनम् : **ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।**

हस्त प्रक्षालनम् : **ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ श्री कृष्णपरमात्मने नमः।**

प्राणायाम : **ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।**

दिग्वन्धनम् : **ॐ अपसर्पन्तु ते भृता ये भूता भुवि संस्थिताः। ये चात्र विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥**

उपक्रामन्तुभूतानि पिशाचा सर्वतो दिशम्।

सर्वेषामविरोधेन ब्रह्म कर्मसमारभे ॥

तत्पश्चात् पीली सरसों को पूर्वादि से क्रमशः चारों और फेंकें।

ॐ प्राच्यै नमः, ॐ अवाच्यै नमः, ॐ प्रतीच्यै नमः। ॐ उदीच्यै नमः, ॐ अन्तरिक्षायनमः, ॐ यज्ञभूम्यै नमः॥

विनियोग : **ॐ पृथिवीति मन्त्रस्य मेरूपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः॥**

पृथिवी पूजा : **ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्॥**

ॐ पृथिव्यै (आधारशक्तये) पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घ्यं, मुखे आचमनीयम् शरीरे स्नानीयम् वस्त्रोपवस्त्रं, यज्ञोपवीतं एष गन्धः इमे अक्षताः इमानि पुष्पाणि धूपोदीपश्च नैवेद्यं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि॥

नोट : इति सर्वेषां देवानां कृते सर्वत्र प्रयोज्यम्॥

तीर्थाभिमन्त्रणम् : ॐ गंगेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु ॥

आत्मसिंचनम् : ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आत्म तिलकम् : ॐ सुचक्षाऽअहमक्षीभ्यां भूयासꣳसुवर्चा मुखेन।
सुश्रुत कर्णाभ्यांभूयासम् ॥

अङ्गन्यास : ॐ मनो वाक् प्राण चक्षुः श्रोत्र नाभिहृदय कण्ठ शिरः शिखावाहूभ्यां यशोवलम् ॥

दीपार्घ्यम् : ॐ सुप्रकाश महादीप सर्वतस्तिमिरापह।
प्रसीदमम गोविन्द दीपार्घ्य प्रतिगृह्यताम् ॥

दीपप्रार्थना : ॐ भो दीप। ब्रह्मरूपस्त्वमन्धकार निवारक।
इमा मया कृता पूजा गृह्णतेजो विवर्धय।

धूप अर्घ्यम् : ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयः सुमनोहर।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूक्क्कमार्घ्यः प्रतिगृह्यताम् ॥

प्रार्थना : वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूत निवासोऽसि वासुदेव नमोस्तुते ॥

प्रतिज्ञा संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य तत्सत् ब्रह्मणोह्निद्वितीये परार्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराह कल्पेवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बुद्वीपे भारतवर्ष भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशांन्तर्गते पुण्य बृहस्पति क्षेत्रे अमुकायनगते सूर्ये मासोत्तमेमासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथा योग करण मुहूर्त वर्तमाने चन्द्रतारानुकूले पुण्येऽहनि अमुक गोत्रोऽमुक शर्माऽहं काय वांङ् मनः सकलपापक्षय पूर्वक श्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्य फलप्राप्ति कामा अमुक गोत्रस्य अमुक शर्म्मणः पितुः यम मार्गे तीव्रवाताश्म वृष्टि शर्कराकंटक तप्तवालुका वैतरण्यादि दोषनिवृत्तिहेतुना धर्मशान्ति कर्मणि गणपतिपूजन पूर्वकमेभिर्द्रव्यैर्दश दिक्पाल षोडशमातृ चतुर्षष्टि योगिन्यष्ट कुल वासुकि पूजन पुरासर सूर्यादिनवग्रह यथोक्त वेदादिभिर्मन्त्रैः पूजनमहं करिष्ये ॥

॥ अथच स्वस्तिवाचनम् ॥

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तारक्षोऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिद्द्धधातु॥ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्। विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रूद्रादेवता ऽऽदित्या देवता मरूतो देवता विश्वे देवा देवता वृहस्पतिर्देवतेंद्रो देवता वरुणो देवता। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳪ शान्तिः पृथिवि शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्ति र्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधिसुशान्तिर्भवतु। ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव। इमा रूद्राय तवसे कपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन् ननातुरम्। एतन्तेदेवसवितुर्यज्ञम्प्राहु-र्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव॥ मनोर्जूति र्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳪसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोप्रतिष्ठ॥ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति॥

॥ अथ गणपति पूजा मन्त्र ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिᳪहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियापतिᳪहवामहे निधिनान्त्वा निधिपतिᳪहवामहे वसोमम आहम् जानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। नमो गणेव्भ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेव्भ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमः॥

गणपति प्रार्थना

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ शुक्लाम्वरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्व विघ्नोपशांन्तये। अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः

सुरासुरैः ॥ सर्व विघ्न हरस्तस्मै श्री गणपतयेनमः। वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नंकुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।

॥ अथ लक्ष्मी पूजा मन्त्र ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णान्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ श्री लक्ष्म्यै नमः ॥

नोट : पश्चात् हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

॥ लक्ष्मीप्रार्थना ॥

ॐ नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

नमस्ते गरूडारूढे कोलासुरभयंकरी। सर्व पाप हरे देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥ सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुःख हरे देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनि। मन्त्र पूते सदा देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्य शक्ति महेश्वरी। योगजे योग सम्भूते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महा शक्ति महोदरे। महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

पद्मासन स्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि। परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

श्वेताम्बर धरे देवी नानालंकार भूषिते। जगत् स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥

॥ अथ रक्षा पूजा मन्त्रः ॥

ॐ मानः शꣳसोऽररूषो धूर्तः प्रणमर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणंस्पते ॐ यदा वन्धनन्दाक्षायणाहिरण्यꣳ शतानी काय सुमनस्य मानाः। तन्म आवध्नामि शत शारदाया युष्मांजरदष्टिर्यथासम्।

नोट : इस मन्त्र से मौली पर फूल अक्षत जल तथा तिलक चढ़ा करके निम्नलिखित मन्त्र पढ़ करके दाएं हाथ में बांध दें।

ॐ येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महावलः। तेन त्वां प्रतिवध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

॥ ओंकार पूजनम् ॥

ॐ आवाहयाम्यहं देवं ॐ कारं परमेश्वरम्। त्रिमात्रं त्र्यक्षरं त्रिपदं च त्रिदैवतम् ॥

त्र्यक्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयं शुभम्। अणवं प्रणवं हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम् ॥

अनादि निधनं देवमप्रमेयं सनातनम्। परात्परतरं बीजं निर्मलं निष्कलं शुभम् ॥

ॐ आव्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति ब्याधीमहारथो जायताम् दोग्धीर्धेनुर्वोढा नडवानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णुरथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न औषधयः पच्यन्तांयोगक्षेमोनः कल्पताम्।

ॐ ओंकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः ॥

॥ षोडशमातृका पूजनम् ॥

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देव सेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिस्तथात्मकुलदेवता। कुल देव्यन्तर्गत गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः ॥

॥ अथसप्त घृत मातृका पूजनम् ॥

ॐ ललिता च उमा गौरी अम्बिका सलिलाश्च या ॥
भगाही च भगाक्षीच सप्तैते घृत मातराः ॐ सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः ॥

॥ अथ ब्रह्म पूजनम् ॥

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः। सुरुचोवेन आवः सुवुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥

॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥

॥ अथविष्णु पूजनम् ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधेपदम्। समूढ़मस्य पाः सुरे स्वाहा॥ ॐ विष्णवे नमः॥

॥ अथ शिव पूजनम् ॥

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॐ शिवाय नमः॥

॥ अथ चतुषष्ठि (चौसठ) योगिनी पूजनम् ॥

ॐ आवाह्याम्यहं देवीं योगिनि परमेश्वरीम्॥ योगाभ्यासेन सन्तुष्टा परध्यान समन्विता॥ दिव्य कुण्डल संकाशा दिव्य ज्वाला त्रिलोचना। मूर्तिमति हय्मूर्ता च उग्राचैवोग्ररूपिणि॥ अनेक भाव संयुक्ता संसारार्णव तारिणि। यज्ञं कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः॥ ॐ चतुषष्टि योगिनीभ्यो नमः॥

तत्पश्चात् चतुषष्टि योगिनी के लिए तेल संकल्प करें।

संकल्प : ॐ अद्येति संकीर्त्य अमुक गोत्रोऽहं अमुक नाम शर्माऽहं डाकिनी शकिनी तस्करादि दोष निवारणार्थ कर्तव्यं भैरव क्षेत्रपाल पूजन योगिनी पूजा कर्मणि यथा शक्ति तैल तत् प्रतिनिधि भूतमिदं द्रव्यं वा यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय (योगिनीभ्यः) तुभ्यमहं सम्प्रददे।

कलश स्थापनम्

भूमिस्पर्श : ॐ महीद्यौः पृथ्वी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षितम्। पिपृतानो भरीमभिः।

तण्डुलपुंजम् : ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्रह्मणास्त राजनपारयामसि॥

कलशस्थापनम् : ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जा।
निवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरूधारा पयस्वतीः पुनर्म्माविशताद्रयिः॥

जलपूरणम् : ॐ वरुणास्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थोवरूणस्य।

		ऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीत् ॥
तीर्थजलम्	:	इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमे स च तापरुष्णया । मरुद्वृधे वित्तस्तयार्जीकीये श्रृणु ह्यासुषोमया ॥
गन्धक्षेप:	:	ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥
सर्वौषधी:	:	ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनेनु वभ्रुणामहꣳशतंधाम्मानि सप्त च ॥
दूर्वा	:	ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परूषः परूषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥
पंचपल्लवा:	:	ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्ण्णेवो वसतिष्कृता । गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवसथ पुरुषम् ॥
सप्तमृतिका	:	ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥
पंचगव्यम्	:	ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।
पूगीफलम् (ऋतुफलम्)	:	ॐ या फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुचन्त्वꣳहसः ॥
पंचरत्नम् (दक्षिणा)	:	ॐ परिवाजपतिः कविरग्निहव्यान्यक्रमीत् दधद्रत्नानिदाशुषे ॥
रक्तवस्त्रम्	:	ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमामासदत्स्वः । वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो ॥
पूर्णपात्रम्	:	ॐ पूर्णादवि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳशतक्रतो ॥
श्रीफलम्	:	ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वꣳहसः ॥

वरुणावाहनम् : ॐ तत्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह वोध्यरूशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः॥
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणं आवाहयामि।

देवतावाहनम् : ॐ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कला।
सगृह्य निर्मितोयेन कलशस्तेन कथ्यते।
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः।
मूले तस्यस्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सरयू चन्द्रभागा सरस्वती।
कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।
नदश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्चसंहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशेस्थिताः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थ दुरितक्षयकारकाः॥

प्रार्थना

ॐ देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नौऽसितदाकुम्भविधृतो विष्णुना स्वयम्। त्वत्तोये सर्वतीर्थानिदेवाः सर्वे त्वयिस्थिताः। त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुत्वंच प्रजापति। आदित्यावसवोरूद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपियतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तृमीहे जलोद्भव। सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा। पूर्णाशाः पूर्णसंकाशः पूर्णा सर्वेमनोरथाः पूर्णकुम्भप्रसादेन पूर्णा सिद्धि भविष्यति।

॥ अथ नव ग्रह पूजन मन्त्राः ॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयनमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सवितारथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय नमः ॥

ॐ इमं देवाअसपत्नꣳसुवुधं महतेक्षत्रायमहते ज्यैष्ठाय महते जान-राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्य पुत्रमुमुष्यै पुत्रमस्यै विशएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा॥ ॐ चन्द्रमसे नमः ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याअयं अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति॥ ॐ भौमाय नमः।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्ते ꣳ सृजेथा मयं च॥ अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्चसीदत॥ ॐ बुधाय नमः।

ॐ वृहस्पतेऽति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्वीदयच्छ वस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ वृहस्पतयेनमः॥

ॐ अन्नात्परिस्रतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमंप्रजापतिः। ऋतेन सत्य मिंद्रयं विपान ꣳ शुक्रमन्धसइन्द्रस्योन्द्रयमिदम्पयोऽमृतंमधु॥ ॐ शुक्राय नमः॥

ॐ शन्नोदेवी रभीष्ट्य आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तुनः॥ ॐ शनैश्चराय नमः॥

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा कया शचिष्टयावृतः। ॐ राहवे नमः॥

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्याअपेशसे समुत्षद्विरजायथाः॥ ॐ केतवे नमः॥

॥ अथ दश दिक् पाल पूजनम्॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम। हवयामि शक्रंपुरुहतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधातविन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवां आसादयादिह॥ ॐ अग्नये नमः॥

ॐ यमायत्वा गिरस्वते पितृमते स्वाहा-स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे। ॐ यमाय नमः॥

ॐ एषते निर्ऋतेभागस्वं जुषस्व स्वाहा अग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्य यमनेत्रेभ्योदेवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वदैव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः स्वाहामित्रावरूणा-नेत्रेभ्यो वामरून्नेत्रेभ्यो वादेवेभ्य उत्तरासद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्यः उपरिसद्भ्यो द्युसद्भ्यः स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्ये नमः।

ॐ इमं में वरुणश्रुधीहवामद्या च मृडय त्वामवस्युराचके। ॐ वरुणाय नमः॥

ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविशतिः। ते अग्नेश्वमयुंजंस्ते अस्मिन् जवमादधुः॥ ॐ वायव्ये नमः॥

ॐ वयः सोम व्रते तवमनस्तनूषुविभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ कुवेराय नमः॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमव से हूमहेवयम्। पूषाणो यथा वेदसाम सद्वृधे रक्षितापायुरधब्दः स्वस्तये॥ ॐ ईशानाय नमः॥

(उर्ध्व ब्रह्म को ईशान तथा इन्द्र के बीच स्थापित करें। तथा अनंत को वरुण तथा नैर्ऋतिकोण के बीच स्थापित करें।)

ॐ ब्रह्म यज्ज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोवेन आवः सुवुध्न्या उपमा अस्या विष्टाः सतश्चयोनि मसतश्चविवः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

गायत्री पूजनम्। ॐ भूःभुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहिधियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ गायत्र्यै नमः॥

।नवदुर्गा पूजनम्॥ प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणि। तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥ नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिता। उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥ ॐ नव दुर्गायै नमः॥

। सर्व देवपूजनम्॥ ॐ ब्रह्मा मुरारीस्त्रिपुरान्तकारी भानुःशशि भूमिसुतोबुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति कराः भवन्तु॥

हवन

अक्षत पुष्प से अग्नि पूजन करें—

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे।

देवां आसा दयादिह॥ अग्नये नमः॥

प्रार्थना—

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।

हिरण्यवर्णममलं विशुद्धं सर्वतोमुखम्॥

सर्वतः पणिपादं तत् सर्वतोऽक्षि शिरो मुखम्।

वैश्वानरो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु॥

स्रुवे से घी की आहुति दें और शेष को प्रोक्षणि पात्र में डालते जाऐं—

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये नमम

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय न मम इत्याघारौ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम इत्याज्य भागौ।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम

ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम

ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

ॐ सत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसोव्युष्ठौ। अवयक्ष्वनो वरुणः रराणो व्रीहि मृडीक ः सुहवोनऽएधि स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्ति पाश्च सत्वमित्वमयाऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजःस्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्न्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काःस्वाहा। इदं वरुणाग्नीभ्यां न मम।

ॐ उदुतमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विध्यम ः श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानगसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यादितये न मम।

इसके बाद चरु (हवन सामग्री) से होम करें—

ॐ गणानान्त्वा गणपतिःहवामहे ० स्वाहा

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमा ० स्वाहा

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे ० स्वाहा

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतऽ० स्वाहा

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः ० स्वाहा

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे ० स्वाहा

मातृका होम—

ॐ गौर्ये स्वाहा, ॐ पद्मायै स्वाहा, ॐ शच्यै स्वाहा

ॐ मेधायै स्वाहा, ॐ सावित्र्यै स्वाहा, ॐ विजयायै स्वाहा

ॐ जयायै स्वाहा, ॐ देवसेनायै स्वाहा, ॐ स्वधायै स्वाहा

ॐ स्वाहायै स्वाहा, ॐ मातृभ्यः स्वाहा, ॐ लोकमातृभ्यः स्वाहा,

ॐ हृष्टयै स्वाहा, ॐ पुष्ट्यै स्वाहा, ॐ तुष्ट्यै स्वाहा

ॐ आत्मदेव्यै स्वाहा।

सप्तमातृका होम—

ॐ ललितायै स्वाहा, ॐ उमायै स्वाहा, ॐ गौर्यै स्वाहा,

ॐ अम्बिकायै स्वाहा, ॐ सलिलायै स्वाहा, ॐ भगाह्यै स्वाहा,

ॐ भगाक्ष्यै स्वाहा।

नवग्रह होम—

ॐ सूर्याय स्वाहा, ॐ चन्द्रमसे स्वाहा, ॐ भौमाय स्वाहा
ॐ बुधाय स्वाहा, ॐ गुरवे स्वाहा, ॐ शुक्राय स्वाहा
ॐ शनैश्चराय स्वाहा, ॐ राहवे स्वाहा, ॐ केतवे स्वाहा

अधिदेवता होम—

ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा, ॐ उमायै स्वाहा, ॐ स्कन्दाय स्वाहा
ॐ विष्णवे स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ इन्द्राय स्वाहा
ॐ यमाय स्वाहा, ॐ कालाय स्वाहा, ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा

प्रत्यधिदेवता होम—

ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ अद्भ्यः स्वाहा, ॐ पृथिव्यै स्वाहा
ॐ विष्णवे स्वाहा, ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा
ॐ प्रजापतये स्वाहा, ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

पंचलोक पाल होम—

ॐ विनायकाय स्वाहा, ॐ दुर्गायै स्वाहा, ॐ यमाय स्वाहा
ॐ आकाशय स्वाहा, ॐ अश्विभ्यां स्वाहा।

दिक्पाल होम—

ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ यमाय स्वाहा
ऊं नैऋतये स्वाहा, ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ वायवे स्वाहा
ऊं कुवेराय स्वाहा, ॐ ईशानाय स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
ॐ अनन्ताय स्वाहा, ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा, ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा

ऋषि होम—

ॐ अरुन्धती सहितेभ्यः सप्तऋषिभ्यः स्वाहा, ॐ ध्रुवाय स्वाहा
ॐ अगस्त्याय स्वाहा

अनेन होमेन सूर्यादि नवग्रहाः अधिदेव प्रत्यधिदेव पंचलोकपाल दिक्पाल वास्तु क्षेत्रपालाश्च प्रीयन्ताम् न मम।

पूर्णाहुतिः मन्त्र—

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविᳬसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इदमग्नये न मम।

स्रुवसे घृत धारा दें—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।

भस्मधारण मन्त्र—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे
कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम्
यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिण बाहुमूले
तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि।

धर्म शान्ति (पिण्ड दान विधि)

रक्षादीपक प्रज्वलित कर दो वस्त्र धारण किए हुए यजमान श्राद्ध स्थान में बैठकर—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचि॥

मन्त्र से श्राद्ध की वस्तुओं पर एवं आत्मसिंचन करे तथा पवित्र धारण करे। फिर गणपति पूजन, कलश स्थपन, नवग्रहपूजन तथा होमादि करके तदनन्तर श्वेत सरसो लेकर—

ॐ नमो नमस्ते गोविंद पुराण पुरुषोत्तम।

इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतोदिशः॥

ॐ प्राच्यै नमः ॐ अवाच्यै नमः ॐ प्रतीच्यै नमः ॐ उदीच्यै नमः

ॐ अन्तरिक्षायै नमः ॐ श्राद्ध भूम्यै नमः।

इस प्रकार श्वेतसरसों और तिल बिखेरने के बाद नीवीं बांधे—

ॐ सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्म यजमानस्येन्द्रिस्य योनिरसि सुसस्याः कृषि स्कृधि।

कुशत्रय तिलजल लेकर

ॐ तत्सदद्येति उच्चार्य अमुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणे

याम्ये मार्गे तीव्र वाताश्म वृष्टि शर्करा कंटक तप्त बालुकावैतरण्यादि दोष निवृत्ति हेतुना स्वर्ग प्राप्ति कामनया अद्य सप्तदशाहदिने (त्रयोदशाहदिने) धर्मशांतिमहं करिष्ये।

प्रतिज्ञा संकल्प कर फिर तीन बार गायत्री जाप कर गणेश गौर्यादि पूजनोपरान्त होम पूर्णपात्र दान के बाद यव कुश जल लेकर—

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणे याम्ये मार्गे तीव्र वाताश्म वृष्टि शर्करा कंटक तप्तवालुका वैतरण्यादि दोषनिवृति हेतुना स्वर्ग प्राप्ति कामनया चाद्य सप्तदशाहदिने (त्रयोदशाहदिने) धर्मशान्ति कर्मणि विष्णो इदं ते आसनं नमः ।

इसी प्रकार 'ब्रह्मन्निदं ते आसनं नमः' तथा 'शिव इदं ते आसनं नमः'।

फिर अपसव्य (दाएं कंधे पर जनेऊ) होकर दक्षिणाभिमुख कुशतिल जल लेकर— **ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो याम्यें मार्गे तीव्र वाताश्म वृष्टि शर्करा कंटक तप्त वालुका वैतरण्यादि दोष निवृति हेतुना स्वर्ग प्राप्ति कामनया चाद्यसप्तशाह (त्रयोदशाह) दिने धर्मशान्तिकर्मणि सपरिवार यमेदं ते आसनं स्वधा नमः ।**

यम को आसन देकर फिर

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्म्मणो याम्येमार्गे तीव्र वाताश्मवृष्टि शर्करा कंटक तप्त वालुका वैतरण्यादि दोष निवृत्ति हेतुना स्वर्ग प्राप्ति कामनया चाद्य सप्तदशाह (त्रयोदशाह) दिने धर्मशान्ति कर्मणि पितुरमुकशर्मन्निदं ते आसनं स्वधा ।

इस प्रकार पितर को आसन देकर तदनन्तर उत्तराभिमुख सव्य (बाएं कंधे पर जनेऊ) कर कुशत्रय लेकर

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णो स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।

मन्त्र से विष्णु का आवाहन कर फिर

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सवुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः । ब्रह्मणे नमः

ब्रह्म का आवाहन कर तदनन्तर

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत उषवे नमः वाहुभ्यां उतते नमः । शिवाय नमः

शिव आवाहनकर तीनों आसनों पर '' ॐ यवोसि यवयास्मद्वेषो यवयाराति '' जौ डालकर अपसव्य (जनेऊ दाएं कंधे पर) कर

ॐ सुगन्नु पंथां प्रदिशं न एहि ज्योतिषाद्धेह्य जरन्न आयुः
अपैतु मृत्युरमृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु । यमाय नमः

यम का आवाहन कर

ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्यासो अग्निष्वाताः पथिभिर्देव यानैः

अस्मिन्यज्ञे स्वधयामादंतोऽधिव्रवंतु तेवंन्त्वस्मान्।

पितृ आवाहन कर 'ॐ अपहता असुरा रक्षा ः सिवेदिषदः'

तिल डाल कर यज्ञोपवीत सव्य कर विष्णु ब्रह्म और शिव के अर्घ्यपात्रों पर पवित्र (कुश) रखें—

ॐ पवित्रेस्थौ वैष्णव्यो सवितुर्व प्रसव उत्पनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः, तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

तदनन्तर जल डालें—

ॐ शन्नो देवी रभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।

फिर जौ डालने के बाद अर्घ्यपात्र को दाएं हाथ में कर

ॐ या दिव्या आपः पयसा संवभूवुर्या अंतरिक्ष उत्पार्थवीर्या हिरण्य वर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवा सः स्योना सुहवा भवन्तु

पढ़कर जौ कुश जल ले कर

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणो धर्मशांतिकर्मणि विष्णो एष ते अर्घो नमः, इसी प्रकार ब्रह्मन् एष ते अर्घो नमः।

तथा 'शिव एष ते अर्घो नमः।'

विष्णु ब्रह्म एवं शिव को अर्घ्य देकर पात्र सीधा रख दें तथा —

विष्णो इदं ते स्थानमसि।

ब्रह्मन्निदं ते स्थानमसि।

शिवेदं ते स्थानमसि।

अर्घ्यपात्रों का स्पर्श कर तदनन्तर अपसव्यकर यम एवं पितर के अर्घ्यपात्रों पर पवित्र रख जल डालकर 'ऊं अपहता असुरा रक्षा ः सिवेदिषदः' से तिल डालें फिर 'ऊं या दिव्या आप' इत्यादि मन्त्र पढ़ कर अभिमन्त्रित कर तिल कुश जल ले कर—

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि सपरिवार यम एष ते अर्घ्यः स्वधा नमः ।तथा

'ॐ अद्यादि पूर्ववत् पितुरमुक शर्मन्नेषतेऽर्घः स्वधा' से यम एवं पितर को अर्घ्य देकर पात्र उल्टा रख दें।

'सपरिवार यम इदं ते स्थानमसि।'

'पित्रे स्थानमसि' अर्घ्यपात्रों का स्पर्श करें। फिर सव्य हो गन्ध पुष्पादि विष्णुब्रह्म शिव आदि को निवेदित कर

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि विष्णो एतानि गंधपुष्प धूप दीपैला लवंग पूगीफल तुलसीदल यज्ञोपवीत तांबूल वासांसि ते नमः।

इसी प्रकार ब्रह्म शिव के लिए भी गंध पुष्पादि निवेदन कर संकल्प करें। तदनन्तर अपसव्य कर यम और पितर के लिए गन्धादि देकर—

'ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्माणो धर्मशान्ति कर्मणि सपरिवार यम एतानि यथासंभव गंधादीनि ते स्वधा नमः।'

तथा 'एवमेव पित्रे स्वधा।'

फिर यज्ञोपवीत सव्य कर जल में अन्न से दो आहुतियां डालें—

'ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा'

'ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।'

तदनन्तर अपसव्य कर 'ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामि पितृभ्यो नमः' कुशाओं पर अन्न छोड़ दें।

जनेऊ सव्य कर विष्णु आदि के भोजन पात्र पर अन्न परिवेषण कर

ॐ मधुवाता ऋतायते इत्यादि मन्त्र से मधु दान कर उत्तान हाथों से पात्र स्पर्श कर

ॐ पृथिवी ते पात्रम्— इत्यादि मन्त्र से दक्षिण अंगुष्ठ से स्पर्शकर 'ॐ यवोसीति' मन्त्र से यव (जौ) बिखेर कर जो कुशजल लेकर

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि परिविष्टं परिवेष्यमाणमेक ब्राह्मण तृप्ति पर्यन्तं विष्णो इदं ते अन्नं नमः।

इसी प्रकार

'ब्रह्मन् इदं ते अन्नं नमः'

शिव इदं ते अन्न नमः।

कहते हुए जल छोड़ दें।

तदनन्तर अपसव्य होकर यम और पितर के लिए भोजनपत्र पर अन्न परिवेषण पूर्वक 'ॐ मधुबाता' मन्त्र से मधु दान कर अनुत्तान (उल्टे) हाथों से पात्र स्पर्श कर

ॐ पृथिवी ते पात्रमिति मन्त्र से अंगुष्ठ स्पर्शकर 'ॐ अपहता असुरारक्षा' इत्यादि मन्त्र से तिल बिखेर कर तिलकुश जल लेकर

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि परिवष्टिं परिवेष्यमाणमेक ब्राह्मण तृप्ति पर्यन्तं विष्णो इदं ते अन्नं नमः।

इसी प्रकार

'ब्रह्मन् इदं ते अन्नं नमः

शिव इदं ते अन्नं नमः'

कहते हुए जल छोड़ दें।

तदनन्तर अपसव्य होकर यम और पितर के लिए भोजनपात्र पर अन्न परिवेषणपूर्वक 'ॐ मधु वाता...' मन्त्र से मधु दानकर अनुत्तान (उल्टे) हाथों से पात्र स्पर्शकर

ॐ पृथिवी ते पात्रमिति मन्त्र से अंगुष्ठ स्पर्श कर

ॐ अपहता... इत्यादि मन्त्र से तिल बिखेर कर तिलकुश जल लेकर

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि परिविष्टं परिवेष्यमाणमेक ब्राह्मण तृप्ति पर्यन्तं स परिवार यम एतत्तेऽन्नंस्वधानमः

इसी प्रकार—'अमुक शर्मणे पित्रे एतत्तेऽन्नं स्वधा'

कहते हुए जल छोड़े।

ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।

तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु

प्रार्थना कर तीन बार गायत्री जापकर अपसव्य से

ॐ अग्निदग्धाश्चये जीवा ये प्रदग्धा कुलेमम।

भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ताः यान्ति परां गतिम्।

अन्न छोड़ दें। तदनन्तर सव्य अपसव्य से आचमन के लिए जल दें। तदनन्तर सव्य अपसव्य से पिण्ड के लिए दो वेदियों का निर्माण कर कुशा से सात-सात रेखाएं करें—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैते मोक्षदायिकाः॥

कुशा को ईशान कोण में फैकें फिर जल से सींच कर

ॐ ये रुपाणि प्रतिमुञ्च माना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्ठांल्लोकान् प्रणुदात्वस्मात्॥

मन्त्र से जलती हुई शलाका वेदिका पर घुमा कर दक्षिण की ओर छोड़ दें, तदनन्तर जड़ रहित तीन कुशाऐं वेदिकाओं पर रखें। (उपरोक्त सभी कृत्य ब्रह्मादि के लिए सव्य तथा यम, पितर के लिए अपसव्य जनेऊ से करें) फिर यज्ञोपवीत सव्यकर जौ, जल, गंध पुष्प लेकर–

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्म्मणो धर्मशान्ति कर्मणि विष्णोऽत्रावनेनिक्ष्वते नमः इसी प्रकार ब्रह्मा और शिव के लिए अवनेजन दें।

तदनन्तर अपसव्य होकर सपरिवार यम एवं पितर के लिए गंधपुष्प जल तिल लेकर–

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः धर्मशान्तिकर्मणि सपरिवारयम अत्राऽवनिक्ष्वते स्वधा नमः।

पितर के लिए– **'पित्रे स्वधा'**।

फिर जनेऊ सव्यकर घृत, जौ, मधु मिश्रित अन्न से तीन पिण्डों का निर्माण कर जल लेकर–

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो धर्मशान्तिकर्मणि विष्णो एष ते पिंडो नमः। 'ब्रह्म एष ते पिंडो नमः' शिव एष ते पिंडो नमः। अपसव्य होकर घृत, तिल, मधुमिश्रित अन्न से दो पिण्ड बना कर हाथ में जल लेकर–

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि सपरिवार यम एष ते पिण्डः स्वधा नमः। 'पित्रे एषते पिण्डः स्वधा'। तदनन्तर 'लेपभागभुजस्तृप्यन्तु' कुशमूल (जड़) से हस्त प्रोक्षणकर–

ॐ अत्र सपरिवार यममादयस्व यथा भागमावृषायस्व। मन्त्र से श्वास रोकर पितर मूर्ति का ध्यान करते हुए दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए श्वास छोड़ दें।

उसके बाद सव्य होकर यव, जल, गंध, पुष्प लेकर–

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि विष्णोऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्वते नमः

पिण्ड के ऊपर प्रत्यवनेजन छोड़ दें।

इसी प्रकार—

'ब्रह्मन् अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्वते नमः।'

शिव अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्वते नमः। ब्रह्मा और शिव के पिण्ड पर प्रत्यवनेजन छोड़ें।

अपसव्य कर तिल, जल, गंध, पुष्प लेकर—

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः धर्मशान्तिकर्मणि सपरिवारयम पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्वते स्वधा नमः। पित्रे प्रत्यवनेनिक्ष्वते स्वधा।

यम और पितर के लिए प्रत्यवनेजन छोड़ कर नीवीं विसर्जन तदनन्तर सव्य होकर आचमन कर सूत्र अथवा वस्त्र लेकर—

ॐ नमस्ते विष्णो रसाय नमस्ते विष्णो शोषाय नमस्ते विष्णो जीवाय

नमस्ते विष्णो स्वधायै नमस्ते विष्णो घोराय नमस्ते विष्णो मन्यवे

नमस्ते विष्णो विष्णो नमस्ते विष्णो देहि गृहान्नो सतस्ते विष्णो

देष्मैतत्ते विष्णो वासः।विष्णु पिण्ड पर सूत्र रखें इसी प्रकार

ॐ नमस्ते ब्रह्मन रसायति..इत्यादि से ब्रह्मपिण्ड पर ओर

ॐ नमस्ते रुद्र रसाय..इत्यादि मन्त्र से रुद्रपिण्ड पर सूत्र रखें फिर अपसव्य होकर वस्त्र अथवा सूत्र लेकर—

ॐ नमस्ते यम रसाय...इत्यादि मन्त्र से यमपिण्ड पर सूत्र दें और ॐ नमस्ते पिता रसाय...इत्यादि मन्त्र से पितर पिण्ड पर सूत्र या वस्त्र चढ़ाऐं फिर सव्य, अपसव्य से संकल्प करें। तत्पश्चात् सव्य अपसव्य से पांचों पिण्डों पर गंध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल, नैवेध चढ़ा कर—

ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलं

ॐ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं

ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु इति तण्डुलान् क्षिपेत्

जल पुष्प चढ़ा कर सव्य होकर—

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणो धर्मशान्ति कर्मणि विष्णु दत्तेतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु— जल छोड़ दें।

ॐ... ब्रह्मन दत्तेतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु

ॐ...शिव दत्तेतदन्न पानादिकमक्षय्यमस्तु ब्रह्म और शिव के लिए संकल्प

छोड़कर अपसव्य होकर सपरिवार यम के लिए भी संकल्प कर पितर के लिए अन्नपानादि संकल्प करें—

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो दत्तैतदन्न पानादिकम-क्षय्यमुपतिष्ठताम्।

तदनन्तर सव्य होकर—

ॐ अघोरो विष्णुरस्तु।

ॐ अघोरो ब्रह्माअस्तु।

ॐ अघोरः शिवोस्तु।

ॐ अघोरः सपरिवारयमरस्तु।

ॐ अघोरः पिता अस्तु।

पश्चिम से पूर्व की ओर सब पिण्डों पर जल छोड़ दें और प्रार्थना करें—

ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारोनोभि वर्द्धतां वेदः संततिरेव च।

श्रद्धा च नोमाव्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्त्विवति अन्नं च

नोवहु भवेदतिथींश्चलभेमहि याचितारश्चनः संतु मा च

याचिष्मकंचन ऐता सत्या आशिषः संतु॥

उत्तर दक्षिण की ओर तत्पश्चात् पिण्डों पर कुशाऐं रखकर जल ओर दूध की धारा दें—

ॐ ऊर्जं बहंतीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतं

स्वधास्थतर्पयत् मे पितरम्।

फिर यम और पितृ पात्र सीधे कर सव्य होकर दक्षिणादान करें—

ॐ अद्येत्यादि संकीर्त्य कृतैतत्धर्मशान्ति पितृ श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं दक्षिणा द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे (तुम्यमहंसंप्रददे)।

तदनन्तर अपसव्य होकर पितृविसर्जन करे—

ॐ बाजे बाजे वतवाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।

अस्य मध्वः पिबतमादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

फिर यमविसर्जन करें—

ॐ सयातुकासरारुढः कासरासमेन तद्गुणा

गताऽस्मिन्मध्वातृप्ता स्वतेजसः व्रजंतु ॥

यज्ञोपवीत सव्य कर—

ॐ मानस्तोके तनयेमान आयुषि मानो गोषुमानोऽश्वेषुरीरिषः ।

मानो वीरान्नुद्रभामिनो वधीर्हविष्मंतः सदमित्वा हवामहे ॥

शिव विसर्जन कर

ॐ अग्नि मीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।

होतारं रत्न धातमम् ।

ब्रह्म विसर्जन कर—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।

स दाधार पृथ्वीं द्यामुत्तेषां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

विष्णु विसर्जन कर—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यः एवच ।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

इस मन्त्र का तीन बार जाप कर अपसव्य होकर रक्षादीप बुझाकर सव्य होकर हाथ पैर धोकर आचमन कर

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।

स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

इस मन्त्र को पढ़े

शय्या दान

तदनन्तर शय्यादान के लिए गणेशादि पूजन कर शय्या पर '' ॐ कांचन पुरुषाय नमः'' पुष्प चढ़ा कर 'ॐ सोपकरण शय्यायै नमः' शय्या की पूजा कर शय्या के चारों पाद धोकर—'ॐ ब्राह्मणाय नमः' पाद्य, अर्घ्य आचमनादि पूर्वक ब्राह्मण की पूजा कर वरण करें—

ॐ अद्येत्यादि संकीर्त्य अमुकगोत्रस्य अमुक शर्मणः पितुः धर्मशान्ति कर्मणि सोपकरण शय्या दानार्थं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे—वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ।

फिर ब्राह्मण को तिलक चन्दन कर हाथ में जल लेकर—

ॐ अद्य सदद्य संकीर्त्य अमुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः पारलौकिक विमानारोहण दिव्य देहत्व महेश्वर पुर गमन पूर्वकं शुभ तूलिकास्तरण प्रावार निधानाच्छादन वस्त्र तन्तु समसंख्य वर्ष सहस्रावच्छिन्न विष्णु लोक वासकामः इमां वरशय्यां नाना विधोपकरणान्वितां विष्णु दैवतां अमुक गोत्र शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

फिर वस्त्र दान के लिए संकल्प—

ॐ तत्सदद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः पारलौकिक महारौद्र कराल रूप यमभटेभ्यः पीडा निवृत्यर्थं एतद्वस्त्रतन्तु समवर्ष सहस्रावच्छिन्न स्वर्गलोक प्राप्तिकामनया इमानि वासांसि वृहस्पति दैवतानि यथानाम गोत्राय ब्राह्मणायाऽहं संप्रददे।

फिर पात्रादिदान के लिए संकल्प करे—

ॐ तत्सदद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः इमानि पात्राणि कांस्य पैत्तल लोहमयानि त्वष्ट्र दैवतानि तथैव छत्रमुत्तानांगिरो दैवतं, पारत्रिक याम्य मार्गस्थ सर्वकंटकादि निवारणार्थं इमे उपानहावुत्तानांगिरो दैवते, पारत्रिक सुख प्राप्तिपूर्वक स्वर्ग प्राप्ति कामनया इमे वरकाष्ठ पादुके विष्णुदैवते अमुक गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

फिर दक्षिणा दान करें—

ॐ तत्सदद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः धर्म शान्तिकर्मणि कृतैतत् शय्यादान वस्त्रोपानद् पात्रादि दान दक्षिणासांगता सिद्धयर्थं दक्षिणाद्रव्यं अमुकगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

गौदान

गोदान दक्षिणा संकल्प करें—

ॐ तत्सदद्येत्यादि अमुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः यममार्गे वैतरणि तर्तुकामः गौरभावेन दक्षिणा द्रव्यं अमुकगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

फिर चारपाई और ब्राह्मण की प्रदक्षिणा कर आशीर्वाद ले।

तदनन्तर त्रयोदश पददान के लिए संकल्प करे—

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः पारलौकिक सुखासन विश्राम कामः चिरकाल स्वर्गलोक वासोतर विष्णुपुर गमन कामनया च इमानि त्रयोदश पदानि

नानादैवतं गंधपुष्पपूंगीफल यज्ञोपवीत वस्त्रासन पात्र उपानत् दक्षिणादि वस्तूनि नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽहं संप्रददे!

यष्टिव्यजन (पंखा) दान हेतु संकल्प—

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः पारत्रिक सुख यममार्गान्निवृत्य विरुद्ध जीव निवारण पूर्वक सुख स्पर्श शीतल वाय्वर्थं इमे यष्टिव्यजने वनस्पति वायुदैवते यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

जलपूर्ण कलश दान के लिए संकल्प—

ॐ तत्सदद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः पारलौकिक प्रपा सहस्र दान सम फल प्राप्ति कामः जलपूर्ण कलशं सवस्त्रं वरुणदैवतं अमुकगोत्रााय ब्राह्मणाय अहं संप्रददे।

फिर ब्राह्मण भोजन संकल्प कर तदनन्तर काक, श्वान, वरुण, सर्प और गोवलि संकल्प करे। तदनन्तर पूर्णाहुति, आशीर्वाद, देवविसर्जन, अग्निविसर्जन करे। सूर्य को अर्घ्य देकर पवित्र मोक्षणकर कार्य समाप्ति करें— इति शुभम्॥

अथ शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध विधिः

अपराह्ने स्नातः शुक्लद्विवासाः शुचिराचान्तः रेखावेष्टितं श्राद्धदेशमागच्छेत्। तत्र प्राङ्मुख उपविश्य सिद्धान्न सम्भवे सिद्धमिति पाचंक पृष्ट्वा पवित्रे घृत्वा श्राद्धमारभेत्।

आत्माभिषिञ्चनम्—**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा।**

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

त्रिकुशजलैः श्राद्धवस्तु सेचनम्—**ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।**

ततो भूमि सूर्य दीप धूपादि पूजान्ते सर्षप तिलकुशैः॥

दिग्बन्धनम्—**ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।**

इदं श्राद्धं हृषीकेश! रक्षतां सर्वतो दिशः॥

ॐ प्राच्यै नमः, अवाच्यै नमः, प्रतीच्यै नमः, उदीच्यै नमः, अन्तरिक्षाय नमः, श्राद्ध भूम्यै नमः। इति दिक्षुतिलसर्षपविकरणदवशेषरक्षाद्रव्येण नीवी बन्धनं कार्यम्।

अपसव्येन नीविबन्धः— ॐ सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमान स्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषि स्कृधि॥ नीवीबतैव पितृ दैवत्यं कृत्यं कार्यम्।

विष्णु ध्यानम्— **ॐ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम्।**

प्रारम्भे कर्मणां विप्र पुण्डरीकं स्मेरद्धरिम्॥

गयागदाधरयोर्ध्यानम्— **श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्।**

मनसा च पितृन्ध्यात्वा ततः श्राद्ध समारभेत्॥

सव्येन त्रिकुशतिलजलैः संकल्पः— ॐ तत्सदद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः **विश्वेदेवपूर्वकं सपात्रिक शुद्ध चातुर्वार्षिकश्राद्धमहं करिष्ये।**

लक्ष्मी नारायण पूजा— **शालग्रामादि प्रतिमायां षोडशोपचारैः लक्ष्मीनारायणौ सम्पूज्य श्राद्धभुवः सन्निधौ संस्थाप्य गायत्रीं त्रिर्जपेत्।**

गायत्र्यास्त्रिर्जपः— **ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।**

नमः स्वाहायै स्वाधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

तत् उत्तराभिमुखो दक्षिणोत्तरक्रमासादित कुशत्रयात्मकासन चतुष्टयं सयवमुत्सृजेत्। सव्यं कृत्वा

विश्वेदेवेभ्य : 4 आसनदानम्— ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः विश्वे देव पूर्वक शुद्धचातुर्वार्षिक त्रि पौरुष श्राद्धे गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाम् अमुकामुकशर्मणाम् त्रिपौरूष शुद्ध श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वे देवा एतानि आसनानि चतुर्धा विभज्य वो नमः॥ इति विश्वेषां देवानां चतुर्धासनानि सयवमुत्सृजेत् ततो पऽसव्यं कृत्वा पातितवामजानुर्दक्षिणाभिमुखो द्विगुण भुग्न कुशत्रयतिलजलान्यादाय पूर्वपश्चिमसादित मोटकरूपाणि द्विगुण भुग्न कुशत्रयतिलजलान्यादाय पूर्वपश्चिमासादित मोटकरूपाणि नवासनानि तिल जल प्रोक्षितानि त्रीणित्रीण्यासनानि पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः पश्चिमत आरभ्य उत्सृजेत्।

पित्रेआसनदानम्— ॐ अद्यामुकगोत्रे पितरमुकशर्मा शुद्ध चातुवार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एतानि आसनानि त्रिधाविभज्यते स्वधा।

पितामहाय आसनदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरूष श्राद्धे गोत्रे पितामह अमुकशर्मा एतानि आसनानि त्रिधा विभज्य ते स्वधा।

प्रपितामहाय— ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वाषिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहः अमुकशर्मा एतानि आसनानि त्रिधा विभज्यते स्वधा। ततः सव्येन—

कृतांजलिः— ॐ विश्वान्देवानमहमावाहयिष्ये।

विश्वेदेवावाहनम्— ॐ विश्वेदेवासऽआगत श्रृणुता मऽइमꣳहवम्।

एदं बर्हिर्निषीदत।

यवविकरणम्— ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

विश्वेदेवपूजनम्— ॐ विश्वेदेवाः श्रृणुते इमꣳहवम्। येमेऽअन्तरिक्षे यऽउपद्य विष्ठयेऽअग्निजिह्वा उतवायजत्राऽआसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्॥

पुराणपाठः— ॐ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।

ये यत्र योजिता श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

ततोऽ पसव्यंकृत्वा दक्षिणाभिमुखः।

कृताञ्जलिः— ॐ पितुरहमावाहयिष्ये।

पित्रादीनामावाहनम्— ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि।

उशन्नुशत ऽआवह पितुर्हविषेऽअत्तवे।

तिलविकरणम्— ॐ अपहताऽअसुरारक्षꣳसिवेदिषदः। इति तिलान्विकीर्य।

पित्रादिपूजनम्—ॐ आयन्तु नो पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभर्देवयानैः।

अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तुते अवन्त्व अस्मान्। ततः सव्यं कृत्वा देवार्घपात्रचतुष्टये।

देवार्घपात्रेषु पवित्रक्षेपः— ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्यते पवित्रपते पवित्रषूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

जलक्षेपः— ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपोभवन्तु पीतये।

शंयोरभि स्रवन्तु नः॥

यवक्षेपः— ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः। इतियवान्प्रक्षिप्य ततोऽप-सव्येन पित्रादि नवार्घपात्रेषु प्रत्येकपवित्रजल तिलान्क्षिप्य

पित्राद्यर्घपात्रेषु पवित्रक्षेपः— ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व०।

जलक्षेपः— ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय०

तिलक्षेपः— ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृं (मातृं) ल्लोकान् प्रीणाहिनः स्वाहा। इतितिलान्। ततः सव्यंकृत्वा देवार्घ पात्रं वाम हस्तेकृत्वा तत्र स्थित पवित्रं देवभोजन पात्रे पूर्वांग्रधृत्वातदुपरिकिंचिदुदकान्तरन्दत्वा।

देवार्घपात्रा भिमन्त्रणम्— ॐ यादिव्याऽआपः पयसासम्बभूर्याऽअन्तरिक्षाऽ-उत्पार्थिवींर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानाऽआपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु। इति पठित्वा यवजलकुशान्यादाय।

देवेभ्योहस्तार्घदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः विश्वेदेवपूर्वक शुद्ध चातु र्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धनिमित्तकानां अमुकामुकशर्मणां त्रिपौरुषश्राद्ध सम्बन्धिनः पुरुरवार्द्रसंज्ञका विश्वेदेवा एष वौ हस्तार्घश्चतुर्धा विभज्य नमः। इत्यर्घंददुत्सृजेत् ततोऽऽपसव्यं कृत्वा पित्राद्यर्घपात्रेषु नवस्वपितूष्णीमेव गन्धपुष्पे प्रक्षिप्य पित्राद्यर्घपात्र वामहस्ते कृत्वा तत्रस्थितं पवित्रं पित्रादिभोजनपात्रेषु उत्तराग्रंधृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरंदत्वा

पित्रर्घपात्राभिमन्त्रणम्— ॐ यादिव्याऽआप: पयसा सम्बभुर्याऽअन्तरिक्षा उत्पार्थिवीर्या। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान ऽआप: शिवा: शꣳ स्योना: सुहवा भवन्तु। इति पठित्वा मोटकतिलजलान्यादाय।

पित्रे हस्तार्घदानम्— ॐ अद्यामुकगोत्रे पितरमुकशर्मा शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एष ते हस्तार्घस्त्रिधा विभज्यस्वधा।

पितामहाय हस्तार्घदानम्— ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मण: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुषश्राद्ध निमित्तिकामुक गोत्रे पितामह: अमुक शर्म एष ते हस्तार्घ: त्रिधा विभज्य स्वधा।

प्रपितामहाय हस्तार्घदानम्— ॐ अद्यामुकगोत्रास्य पितुरमुकशर्मण: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुषश्राद्धनिमित्तकामुकगोत्रे प्रपितामह: अमुकशर्मा एषते हर्स्तार्घ: त्रिधाविभज्य स्वधा। तत: सव्यंकृत्वा पवित्रसहितमवशिष्ट जलयुत देवार्घपात्रचतुष्टयं प्रत्येकं देवासनदक्षिण पार्श्वे।

देवार्घपात्राणामुत्तानेनस्थापनम्— ॐ विश्वेभ्योदेवभ्य: स्थानमसि। इत्युत्तानमेव धारयेत्। अपसव्यं कृत्वा किंचित्प्रपितामहस्यर्घपात्रेस्थित पवित्रादीनि पितामहस्यर्घपात्रे कृत्वा तनि सर्वाणि पित्रर्घपात्रेकृत्वा पित्रर्घपात्रं पिता-महस्यर्घ पात्रोपरि तदुभ्यं पितामहस्यर्घपात्रोपरि धृत्वा पित्रासनवामपार्श्वे।

पित्रा द्यर्घपात्राणांन्यूब्जी कृत्यस्थापनम्— ॐ पितृ पितामह प्रपितामहेभ्य: स्थानमसि। इति मिलितान्येवन्युब्जी कुर्यात् तथा स्थापितानि च तानि-दक्षिणादान पर्यन्तं नोद्धरेत् न चालयेत्। आवृतास्तत्रतिष्ठन्ति पितर: श्राद्ध देवता:॥ तत: सव्यं कृत्वा यवकुशजलान्यादाय

देबेभ्यो गन्धादि (पदक) दानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मण: विश्वे देवपूर्वक शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धनिमित्तकममुकगोत्राणां पितृपितामह प्रपितामहानां त्रिपौरुष श्राद्धसम्बन्धिनी विश्वेदेवा एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीत ताम्बूल रौप्यमयकमण्डलु करपात्र स्वर्णमयांगुलीयककाष्ठपादुकोर्णासन कार्पास धौतोत्तरीयानि चतुर्धा विभज्य वो नम:। इति यथा सम्भवमुत्सृजेत्। ततो ऽपसव्यंकृत्वा मोटक तिलजलन्यादाय।

पित्रे गन्धादि (पदक) दानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रे पितुरमुक शर्मा शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीतताम्बूल रौप्यमय कमण्डलु करपात्रस्वर्णमयाङ्गुलीयककाष्ठापादुकोर्णासन कार्पास धोतोत्तरीयानि त्रिधा विभज्यते स्वधा।

पितामहाय गन्धादि (पदक) दानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मण: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धेऽमुक गोत्रे पितामह: अमुक शर्मा एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीत ताम्बूल रौप्यमय कमण्डलुकरपात्र स्वर्ण-मयाङ्गुलीयककाष्ठपादुकोर्णासनकार्पासधौतोत्तरीयानि त्रिधाविभज्य ते स्वधा।

प्रपितामहाय गन्धादि (पदक) दानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मण: शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धेऽमुक गोत्रे प्रपितामह: अमुकशर्मा एतानि गन्धाक्षत धूपदीप यज्ञोपवीत ताम्बूल रौप्यमय कमण्डलु करपात्र स्वर्ण मयाङ्गुलीयक काष्ठपादुकौर्णासनकार्पास धौतोत्तरीयानि त्रिधा विभज्यं ते स्वधा। ततो जलेनासनानि भोजनपात्रसहितानि भोजनपात्रसहितानि वेष्टयित्वा मण्डलानिकुर्यात्।

मण्डलकरणम्— ॐ ब्रह्मा विष्णुश्चरुद्रश्च श्रीर्हुताशन एव च।

मण्डलानि प्रकुर्वन्ति तस्मात्कुर्वीतमण्डलम्॥

तत: श्राद्धदेयान्नाग्रभागमादाय सघृतं तत्सव्येनैव प्राङ्मुख: पुटकादिस्थजले आहुतिद्वर्यंजुहुयात्।

आहुतिद्वयम्— ॐ अग्नये कव्य वाहनाय स्वाहा। ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा। तृतीयं तूष्णीमेव क्षिपेत्। ततो जलतिल सहितव्यञ्जनयुतमन्नम् अपसव्येन।

भूस्वामि पितृभ्य आहुति:— ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामी पितृभ्यो नम: इति दद्यात्। हुतशेषमन्नं सव्येन देवपात्र चतुष्टये परिवेष्य अपसव्येजन पित्रादि पात्रेपु च परिवेष्य पिण्डार्थं किंचिदवशेषयेत्। तत् उत्कृष्टमन्नंसिद्धम् आमं वा पुरुषाहार क्षमं परिविष्य यथा सम्भवमुपकरणं जलं धृतञ्च तत्रोपनीय सव्येन देवपात्र चतुष्टये अपसव्येन च पित्रादिपात्रेषु (नवस्वपि) मध्वन्नोपरि दद्यात्।

मधुदानम्— ॐ मधुवाता ऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव: माध्वीर्न्न: सन्त्वोषधी: ॥1॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरज:। मधुद्यौरस्तु न: पिता ॥2॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ 2 अस्तु सूर्य:। माध्वीर्गावो भवन्तुन: ॥3॥ ॐ मधुमधु मध्विति जपेत्॥ तत: सव्येन उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रं स्पृष्ट्वा।

देवपात्राभिमन्त्रणम्— ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमि स्वाहा॥ ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़ मस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥2॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्षमदीयम्॥ इति पठित्वा।

ॐ इदमन्नमित्यन्ने ॐ इमा आप: इति जले ॐ इदमाज्यम् इति घृते ॐ इदं हविरिति पुन: अन्ने दक्षिणोत्तानकरस्याङ्गुष्ठमावेश्य।

यवप्रक्षेपः— ॐ यवोऽसियवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः। इतियवान् प्रक्षिप्य

संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्रस्यपितुर शर्मणः विश्वेदेवपूर्वक शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुषश्राद्ध निमित्तक अमुक गोत्राणां पितृ पितामहप्रपितामहानाम-मुकामुक शर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो पुरुरवार्द्र संज्ञकाविश्वेदेवा एतद् वोऽद्यन्नं सोपकरणं परिविष्टं परिवेष्यमाणं चतुर्धा विभज्य नमः॥ इतियवकुश जलैरुत्सृजेत्॥ ततो ऽपसव्यंकृत्वा दक्षिणाभिमुख पातित वामजानुः पितुः पात्रं न्युव्जाभ्यां पाणिभ्यां स्पृट्वा।

पात्राभिमन्त्रणम्— ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृतेअमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णु०। ॐ कृष्णहव्यमिदंरक्षमदीयम्। ॐ इदमन्नम् इत्यन्ने। ॐ इमा आप इति जले ॐ इदमाज्यम् इतिघृते। ॐ इदं हविरिति पुनः अन्ने॥ दक्षिण करस्य न्युब्जमङ्गुष्ठ निवेश्य अप्रदक्षिण क्रमेण।

तिल विकरणम्— ॐ अपहताऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥ इति तिलान्विकीर्य मोटक तिलजलान्यादाय

पितृपक्षे संकल्प— ॐ अद्यामुकगोत्रे पितुरमुकशर्मा शुद्धचातुर्वार्षिक श्राद्धे भूरि भूरितर भूरि तम भोजनार्थम एतत्तेऽन्नं सोपकरण परिविष्टं परिवेष्यमाणं त्रिधा विभज्य स्वधा।

पितामहस्य पक्षे संकल्पः— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे पितामहः अमुक शर्मा भूरि भूरितर भूरितम भोजनार्थम् एत्ततेऽन्नं सोपकरणं परिविष्टं परिवेप्यमाणं त्रिधा विभज्यस्वधा।

प्रपितामहस्य पक्षे संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहः अमुक शर्मा भूरि भूरितर भूरितम भोजनार्थम् एततेऽन्नं सोपकरणं परिविष्टं परिवेष्यमाणं त्रिधाविभज्य स्वधा॥ ततः सव्यं कृत्वाऽऽचम्य।

क्षमापणम्— ॐअन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु हरेर्नामानुकीर्तनात्॥

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति गायत्रीं त्रिर्जपित्वा कुशेषूपविश्य— ॐ मधु-वाता० इतितृचं पठित्वा ॐ रक्षोहणं० ॐ कृणुष्व० भूमौ तिलविकरणम्० ॐ अपहताऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

पितृमन्त्रः— ॐ उदीरतामपवर ऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः (मातरः) सोम्यासः। असुय्यऽईयुरवृका ऋतज्ञास्तेनोऽवन्तु पितरो (मातरो) हवेषु॥ ततः ॐ सहस्रशीर्षा०

इति पुरुष सूक्तम् ॐ आशुः शिशान० इति अप्रति रथ सूक्तं पुराणेतिहासादि पुण्य स्तोत्रादींश्च पठेत्॥ तत् उच्छिष्ट सन्निधावा स्ततकुशत्रयां भूमिं प्रोक्ष्य सर्व प्रकारमन्न मुद्धृत्य सतिलमेकीकृत्य।

बलिदानम्— ॐ अनग्निग्धाये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम।

भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परांगतिम्।

इतिकुशोपरि अन्नम् उत्सृजेत्। ततः सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरि स्मृत्वा गायत्री मधुबाता इति तृचं मधुमधुमध्विति च जपेत्।

ततोऽपसव्यं कृत्वा पिण्ड पातानार्थं हस्तमात्र चतुरङ्गुलोच्छ्रित दक्षिणप्लव (निम्नगा) वेदिका स्थाने सव्यहस्तधृतोपरिभागेन दक्षिणहस्तधृतमूलेन पवित्रेण रेखा करणम्।

पवित्रेण रेखा करणम्— ॐ अपहताऽअसुरारक्षाꣳसिवेदिषद इति प्रादेश मात्रामुल्लिखेत्। पवित्रमेशान्यांदिशिक्षिपेत्।

ज्वलदङ्गार भ्रामणं कुशत्रयास्तरणं च— ॐ येरूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँ ल्लोकान् प्रणुदात्यस्मात्॥ इति मन्त्रेण ज्वलदङ्गारं दक्षिणतो निधायऽउपमूल सकृदाच्छिन्नदक्षिणाग्र कुशत्रयं रेखायामास्तृणुयात्। ततः सव्यं कृत्वा ॐ देवताभ्य इति त्रिर्जपेत्। ततोऽपसव्यं कृत्वा पुटकत्रये जलतिल गन्ध पुष्पाणि कृत्वा एक पात्रं वाम हस्ते कृत्वा मोटकतिलजलान्यादाय।

पित्रेऽवनेजनदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रे पितरमुक शर्मा शुद्धचातुर्वार्षिक त्रिपौरुष निमित्तक श्राद्ध पिण्ड स्थाने अत्रावनेनिक्ष्वते स्वधा। इत्यास्तृत दर्भमूलेऽवनेजनं दद्यात्।

पितामहाय अवनेजनदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष निमित्तक श्राद्ध पिण्ड स्थाने गोत्रे पितामहः अमुक शर्मा अत्रावने निक्ष्वते स्वधा। इत्यास्तृत दर्भमध्येऽवनेजनंदद्यात्।

प्रपितामहाय अवनेजनदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुषनिमित्तक श्राद्ध पिण्डस्थाने गोत्रे प्रपितामह अमुक शर्मा अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। इत्यास्तृतदर्भाग्रे ऽवनेजनं दद्यात्। ततः तिलजलमध्वाज्यहुत शेषान्नेन त्रीन् पिण्डान् निर्माय मधुधृताभ्यामभिधार्य दद्यात्।

प्रथमं मोटक तिलजल पिण्डमादाय— ॐ अद्यामुकगोत्रे पितरमुकशर्म शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा। इति प्रथमावनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात्।

द्वितीयं मोटकतिलजलपिण्डमादाय— ॐ अद्यामुक गोत्रस्यपितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध ऽमुकगोत्रे पितामहः अमुक शर्मा एष ते पिण्डः स्वधा। इति द्वितीयावनेजनेस्थाने पिण्डं दद्यात्।

तृतीयं मोटकतिलजलपिण्डमादाय— ॐ अद्यामुकगोत्रे पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहः अमुक शर्मा एष ते पिण्डः स्वधा। इति तृतीयावनजने स्थाने पिण्ड दद्यात्। पिण्डदानं च सव्योपगृहीत दक्षिण हस्तेनकार्यम्। ततः प्रपितामहातऽऊर्ध्व तिसृणां लेपभाग भुजीनांतृप्तिमुद्दिश्य— ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथा भागमावृषयध्वम्। इति पठित्वा वामावर्तेनोदङ्मुखीभूय प्रीतमनाः श्वासं नियम्य तेनैव यथा परावर्तमानः पितुर्भास्वरमूर्तीर्ध्यायन् ॐ अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषायिषत। इति जपेत्। पूर्ववदवनेजनावशिष्टजलयुतमवनेजन पात्रमादाय।

पित्रे प्रत्यवनेजनदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रे पितरमुकशर्मा शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। इति प्रथमपिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात्।

पितामहाय प्रत्यवनेजनम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धेऽमुक गोत्रे पितामहः अमुक शर्मा अत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा। इति द्वितीय पिण्डोपरि प्रत्यवनेजनम्।

प्रपितामहाय प्रत्यवनेजनम्— ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः शुद्धचातुर्वार्षिकात्रिपौरुषश्राद्धे ऽमुकगोत्रप्रपितामहः अमुकशर्मा अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। तृतीयपिण्डोपरि। ततोनीवीं विस्रंस्य सव्येनाचम्य अपसव्यं कृत्वा।

दक्षिणकरे सूत्रं धृत्वा— ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरोशोषाय नमो वः पितरोजीवाय नमो वःपितरो स्वधायै नमो वःपितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरो पितरो नमो वः गृहान्नो पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्म। इति पठित्वा एतद् वः पितरो वासः इत्युक्त्वा पिण्डेषु सूत्राणि धृत्वा।

पित्रे सूत्रदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रे पितरमुक शर्मा शुद्ध चातुर्वार्षिक श्राद्धे पिण्डे एतत्ते वासः स्वधा।

पितामहाय सूत्रदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे पितामहः अमुकशर्मा पिण्डे एतते वासः स्वधा। इति सूत्र मुत्सृजेत्।

प्रपितामहाय सूत्रदानम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रे प्रपितामहः अमुक शर्मा पिण्डेएतत्ते वासः स्वधा। ततो गन्धपुष्प धूपदीप ताम्बूलानि प्रत्येकं पिण्डेषु दद्यात्।

अन्नपात्रेषु— ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम्। ब्राह्मणस्य करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु ते॥ ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलम्।

पुष्पाणि— ॐ लक्ष्मीवंसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
लक्ष्मीर्वसति गोष्ठेषु सौमनस्यंसदास्तु मे॥
ॐ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्।

अक्षताः— ॐ अक्षत् चास्तुमे पुण्यं शान्तिः पुष्टिर्धृतिश्च मे।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।
ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इत्यक्षतान् अन्न पात्रेषु क्षिपेत्।

यवाः— ॐ यवो ऽसि यवयास्मद्० इति यवान् पात्रेषु क्षिपेत्।
अपसव्यं कृत्वा ततो मोटक तिलजलान्यादाय।

पित्रे ऽक्षयोदकम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे धूपदीपताम्बूलं दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु इति पित्रे अक्षयोदकमुत्सृजेत्।

पितामहाय अक्षयोदकम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे ऽमुक गोत्रस्य पितामह अमुक शर्मणः दत्तैतदन्न-पानादिकमक्षय्यमस्तु।

प्रपितामहाय अक्षयोदकम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे गोत्रस्य प्रपितामहस्य दत्तैतदन्नपानांदिकमक्षय्यमस्तु। इति प्रपितामहाय अक्षयोदकं दद्यात्।

पिण्डोपरि पूर्वाग्रा जलधारा— ॐ ततः सव्यं कृत्वा दक्षिणां दिशं पश्यन् सुमनाः पिण्डोपरि ॐ अघोरा पितरः सन्तु। इति पठन् पूर्वाग्रां जल धारां पिण्डोपरि दद्यात्। ततः कृताञ्जलिः प्राङ्मुखः आशिषः प्रार्थयेत्।

आशिषोग्रहणम्— ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेवच। श्रद्धा च नो माव्यगमद् बहुदेयञ्चनो ऽस्तु॥ अन्नञ्च नो बहु भवेदतिथीं श्चलभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन एताः सत्या आशिषः सन्तु॥ ततो ऽपसव्यं कृत्वा पिण्डोपरि सपवित्र कुशानास्तीर्य।

पिण्डोपरि दक्षिणाग्रा जलधारा— ॐ ऊर्ज वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्॥ इति मन्त्रेण पवित्र कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां

दद्यात्। ततः स्वस्वस्थान स्थितानेव पिण्डान्नम्री भूयाघ्रायोत्थापयेत् ततः पिण्डाधार कुशानुल्मकं च वह्नौ क्षिपेत्। ततः सव्येन देवार्घ पात्र चतुष्टयं सञ्चाल्य अपसव्येन च पित्राद्यर्घपात्राण्युत्तानीकृत्य सव्येन कुशत्रय यवजलै र्देवदक्षिणां दद्यात्।

विश्वेदेव दक्षिणा— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः विश्वे देवपूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धेऽमुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुका मुकशर्मणां श्राद्ध सम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतच्छ्राद्ध प्रतिष्ठार्थ इदं हिरण्यमग्निदैवतं यथानाम् गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदातुमहमुत्सृजे। ततोऽपसव्येन मोटक तिलजलैः पित्रादि श्राद्धदक्षिणां दद्यात्।

पितृ दक्षिणा— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः कृतैच्छ्राद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदक्षिणां दातु महमृत्सृजे।

सर्वाऽऽहारसंकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध प्रतिष्ठार्थ पुरुषत्रयाहार क्षमं सिद्धान्नं सदक्षिणकं सोपकरणं पित्रादिकत्रय्या क्षय्य प्रीत्यर्थ त्रिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

पित्रादि विसर्जनम्— ॐ वाजेवाजे वत वाजिनोनो धनेषुविप्रा ऽमृता ऽऋतज्ञाः। अस्यमध्वः पिबतमादयध्वं तृप्तायातपथिभिर्देवयानैः। इति पित्रादि विसर्जनम्।

सव्येन देवविसर्जनम्— ॐ विश्वे देवाः प्रीयन्ताम्। इति देव विसर्जनम् ततः सव्येन देवताभ्यः इति त्रिर्जपेत्। ततो ऽपसव्येन रक्षा दीपं पाणिना निर्वाप्य सव्यं हस्तौ प्रक्षाल्याऽऽचम्य।

क्षमार्पणम्— ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।

स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।

श्राद्धीय वस्तूनि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत्॥ तदलाँभे जले वा क्षिपेत् ततो बलिवैश्वदेवादि कर्म कुर्यात्।

सव्येन— देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धा सयक्षोरग दैत्य संघाः।

प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता येचान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥

पिपीलिकाः कीट पतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्म निबन्धबद्धा।

प्रयान्तु ते तृप्तिमिदंमयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु॥

येषां न माता न पिता न बन्धर्न चान्नसिद्धिर्न तथान्नमस्ति।

तत्तृप्तयेन्नं भुविदत्त मेतत् ते चान्न तृप्ता मुदिता भवन्तु॥

क्षेत्रपाल बलिः— योऽस्मिन्निवसते क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिङ्करः।

तस्मै एनां प्रदास्यामि बलिं पानीय संयुताम्॥

भूत बलि— शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप रोगिणाम्।

वायसानां कृमीणां च शनकैर्निक्षिपेद् भुवि॥

रौरवादि निषण्णानां प्रेतद्वार निवासिनाम्।

अर्थिनां याचमानानामक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥

गोभ्यो बलिः— सौरभेय्य सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।

प्रतिगृह्णन्तु मेग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः॥ गोभ्यो नमः।

श्वभ्यो बलि— द्वौ श्वानौ श्यामधवलौ बैवस्वत कुलोद्भवौ।

ताभ्यां पिण्डं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ॥

श्वभ्यो नमः।

काकबलिः— ऐद्रवारुण वायव्या याम्या वैनैऋताश्च ये।

वायसा प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पित्तम्॥ वायसेभ्योऽन्नं नमः।

सर्पबलिः— ॐ नमोस्तुते इत्यादि मन्त्र से सर्पेभ्यो नमः।

वरुणबलिः— ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि इत्यादि मन्त्र से वरुणाय नमः।

धर्मराज बलिः— यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।

वैवस्वताय कालाय सर्व प्राण हराय च॥

औदुम्बराय नीलाय दध्नाय परमेष्ठिने।

वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः।

पाश हस्त कृतांताय प्रेताधिपतये नमः। धर्मराजायबलिनमः।

अथ शय्यादानम्

अथ सोपकरण शय्यादान प्रतिज्ञा— तत्सद्येत्यादि अमुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मण विश्वेदेव पूर्वक चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे सकलदुरितक्षय पूर्वक षष्टि वर्ष सहस्रा वछिन्न स्वर्गलोक सहितन्तदुत्तर श्री विष्णुलोक प्राप्ति कामो विश्वेदेवपूर्वक चातुर्वार्षित्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धसागतासिध्यर्थसोपकरणशय्यादानमहंकरिष्ये।

ततः शय्यामास्तीर्य विप्रवरणम्— ॐ तत्सदद्यामुक गोत्रस्य अमुकशर्मणः पितुश्चातुर्वार्षिक विश्वदेव पूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्ध कर्मणि एभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिः अमुक गोत्रम् अमुक शर्माणं भूदेवं शय्यादान प्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं गृहीत्वा विप्रं सम्पूज्य ततः शय्योपरि लक्ष्मीनारायण प्रतिमां विधिवत् संपूज्य ॐ शान्ताकारमिति ध्यात्वा सांगशय्यायैनमः इति शय्यां सम्प्रोक्ष्य गन्धादिना च समभ्यर्च्य।

प्रार्थनाः— ॐ यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया।

शय्यामवाप्यशून्यास्तु भवेज्जेन्मनि जन्मनि॥

यथा न शून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च।

शय्यामवाप्यशून्यास्तु भवेज्जन्मनि जन्मनि।

शय्यादान संकल्पः— ॐ अद्यामुक शर्मणः पितुश्चातुर्वार्षिक विश्वेदेवपूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धाङ्गी भूतामिमां शय्यां तूलिकोपधानोर्णक्षौमकार्पासादि सौभाग्योपकरणालकृतां छत्रचामरव्यजनपादुकोपानहाद्यनिंन्वतां नानाविध भक्ष्यभोज्य लेह्य चोष्यपेयोपेत पक्वान्नाद्याधिकारणाकां गोधूमब्रीहि यवमाषकुलित्थम सूरमुद्गचणकाद्यामान्नमूलफलशाकाद्युपस्कृतां रीतिमय कांस्यमय लोहमयपात्राद्यैः पुरस्कृतां निद्राकलशादि भाण्डेक्षुदण्डाद्युपचितांप्रजापति दैवत्यां खट्वाङ्गिरो दैवत्यां समर्च्चित लक्ष्मीनारायण प्रतिमोपेतां सोपस्करां श्रुंतिस्मृति पुराणोक्त फला वाप्तयेऽमुकगोत्रस्य मुकशर्मणे भूदेवायतुभ्यंसम्प्रददे स्वस्तीति ब्राह्मणो बदेत्। ततः शय्यादान प्रतिष्ठान्ते विप्रं शय्यामारोप्य प्रदक्षिणी कृत्य च ॐ यथा न कृष्णाशयनमित्यादिना शय्यां सम्प्रार्थ्य गोदानं कुर्यात्।

अथगोदानाय विप्रवरणम्— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य अमुकशर्मणः पितुश्चातुर्वार्षिक विश्वेदेव पूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे एभिः पुष्पचन्दन वासोभिः अमुक गोत्रममुक शर्माणं भूदेवं गोदान प्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे। एवं विप्रं संपूज्य ततो यथाशक्ति वस्त्रालङ्कारादिभिः सवत्सांधेनुमलङ्कृत्यागोश्रृंगमूलादिपुच्छाग्रान्ताङ्गेषु देवतः पूजनीयाः। अङ्गपूजा श्रृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः ब्रह्मविष्णू पूजयामि एवं सर्वत्र श्रृंङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः। शिरोमध्ये शिवाय नमः ललाटे देव्यै, मुखे राहवे, नासिकायां षण्मुखाय, नासापुटयोः कम्बलाश्वतरनागाभ्याम् कर्णयोः अश्विभ्याम्, दन्तेषु वायवे, जिह्वायां वरुणाय, हुंकारे सरस्वत्यै, गण्डयोः पक्षमासाभ्याम्, चक्षुषोः शशिभास्कराभ्याम्, ओष्ठयोः सन्ध्याद्वयाय, ग्रीवायामिन्द्राय कुक्षिदेशे रक्षोभ्यः, उरसि साध्येभ्यः, पादेषु धर्माय, जङ्धासु अर्यमणे, खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यः, खुरागेपन्नगेभ्यः,

खुरपश्चिमाङ्गे, अप्सरोभ्यः, पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यः, सर्वसन्धिषु वसुभ्यः, श्रोणीतटे, पितृभ्यः, लांगूले सोमाय, गुह्ये आदित्यरश्मिभ्यः, गोमूत्रेगङ्गायै, गोमये यमुनायै, क्षीरे सरस्वत्यै, दध्निनर्मदायै, घृते अग्नये, रोमसु अष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यः, रोमकूपेषु बालखिल्येभ्यः, उत्तरे पृथिव्यै, पयोधरेषु चतुः समद्रेभ्यः पुच्छांग्रे केतवे नमः केतु पूजयामि एता देवता अंगेषु सम्पूज्य सव्यंकृत्वा देवतीर्थेन—

गोपुच्छंगृहीत्वातर्पणम्— ब्रह्माविष्णु महेशाश्चवेदाश्छन्दासिवत्सराः। देवाः यज्ञास्तथानागागन्धर्वाप्सरसांगणाः। क्रूराःसर्पाःसुपर्णाश्चतरवोजम्भकादयः। विद्याधराजलधरास्तथैवाकाशगामिनःनिराधाराश्चयेजीवापापेधर्मेरताश्चये। तेसर्वेतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणात्

निवती (कण्ठीकृत्य) कायतीर्थेन— सनकश्च सनन्दश्च सनच्चैव सनातनः। कपिलश्चासुरी चैव-बोढ़ः पंचशिखस्तथा॥ ते सर्वेतृप्तिमायान्तु गो पुच्छोदक तर्पणात्।

सव्यं कृत्वा देवतीर्थेन— मरीच्यत्र्यङ्गिरा चैव पुलस्त्य पुलहः क्रतुः। वशिष्ठप्रचेताभृगुर्जावालिनारदादयः। तेसर्वेतृप्तिमायांन्तुगोपुच्छोदकतर्पणात्

अपसव्यं कृत्वा पितृतीर्थेन— कव्यवाडनलः सोमोयमश्चार्यम सञ्ज्ञकाः अग्निष्वात्तस्तथा सौभ्यो हविष्माश्चैव उष्मपाः। सुकाली बर्हिषच्चैवं आज्यपाः पितरश्चये ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणात्।

वसुरूप पितापूज्यः रूद्ररूपः पितामहः। आदित्यरूपः प्रपितामहस्तेभ्यः स्वधानमः गायत्रीरूपिणीमातासावित्री च पितामही। सरस्वतीमयी साक्षात्तृप्यतांप्रपितामही

त्रिकं पितामहाद्यं च मातामह्यादिकं त्रिकम्।
ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गोपुछोदक तर्पणात्॥
आचार्या मातुलाः श्याला: पितृव्याः श्वशुरादयः।
ते सर्वेतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षि पितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता महादयः।
अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम्।
आब्रह्म भुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।

ये बान्धवाऽबान्धवा ये ये ऽन्यन्मनिबान्धवाः।

ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणात्॥

वैयाघ्र पदगोत्राय सोंकृतिप्रवराय च।

अपुत्राय ददाम्येत्तज्जलं भीष्माय वर्मणे॥

ततो गौदान संकल्पः— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य अमुक शर्मणः पितुश्चातुर्वार्षिक विश्वेदेवपूर्वक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे स्वपितुरक्षय वैकुण्ठधामनिवासकामः इमां प्रत्यक्षां सवत्सां गां सुवर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्र पृष्ठीं घण्टा ग्रैवेयकां मुक्ता लाङ्गूलां कांस्योपदोहनी सितवसनद्वयोपेतां सर्वाभरण भूषितां सोपस्करां रुद्र दैवत्यां अमुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम। इति तिलपात्रघृताक्तां गोपुच्छं कृत्वा विप्रहस्तेऽग्नितीर्थे सतिलकुशोदकं दद्यात्।

मन्त्रः मन्त्रसाधन भूताया विश्वाघौघविनाशिनी। विश्वरूप धरोदेवः प्रीयतामनयागवा। ततोदाता दान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थ सुवर्ण दक्षिणां दद्यात्।

गो प्रार्थनाः— नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण तथैवच सुरभी हर मे पापं यन्मयादुष्कृतं कृतम्। गावो ममाग्रतः सन्तु गावो में सन्तुपृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तुगवांमध्येवसाम्यहम्। धेनु ब्राह्मणं च दक्षिणी कृत्य किञ्चिदनुब्रजेत्। ततः पिण्डानादाय श्राद्धदक्षिणां प्रदाय विसर्जनान्ते भूतबलिं च प्रदाय सूर्यायार्घ्यं समर्प्य प्रमादादिति कर्मसमाप्येत्

शुभमस्तुतराम्

ॐ महालये श्राद्ध संकल्प विधिः

हाथ धोने का मन्त्र

(जनेऊ दायें)

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्र पादाक्षि शिरोरूबाहवे। सहस्र नाम्ने पुरूषाय शाश्वते सहस्र कोटी युग धारिणे नमः ॥

अपने ऊपर जल छिड़के

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरी काक्षं स बाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः ॥

पुण्डरी काक्षः पुनातु॥

फिर तीन वार आचमन करे

ॐ केशवाय नमः स्वाहा।

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।

ॐ माधवाय नमः स्वाहा।

तदनन्तर हाथ धोऐं

ॐ गोविन्दाय नमः॥

कुशा की पवित्री धारण करें—

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्यते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

फिर विनियोग करे—

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरू पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।

पृथ्वी पर जल गिराऐं। फूल चावल से पृथ्वी की पूजा करे—

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।

त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्॥

ॐ पृथिव्यै नमः॥ पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं,

स्नानीयं, गन्धं, धूपं, दीपं, नेवैद्यं, समर्पयामि।

नेवैद्यान्ते आचमनीयं॥

दक्षिणा प्रदक्षिणा समर्पयामि नमस्करोमि।

श्वेत (सेती) सरसों अभिमन्त्रित कर पूर्वादि दिशाओं की ओर फेंकें—

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरूषोत्तम। इंद श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः॥

ॐ प्राच्यै नमः॥	**(पूर्व की तरफ)**
ॐ अवाच्यै नमः॥	**(दक्षिण की तरफ)**
ॐ प्रतीच्यै नमः॥	**(पश्चिम की तरफ)**
ॐ उदीच्यै नमः॥	**(उत्तर की तरफ)**
ॐ अन्तरिक्षाय नमः॥	**(आकाश की तरफ)**
ॐ श्राद्ध भूम्यै नमः॥	**(भूमि पर)**

तीन बार गायत्री मन्त्र का जाप करें—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अथवा

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

अब एक पत्ते में सेती सरसों, कुशा की पवित्रि लेकर दक्षिण कटि में नीबी बन्धन करें—

ॐ सोमस्यनीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

फिर निम्न मन्त्र पढ़ने के बाद तिलक धारण करें—

ॐ श्राद्ध काले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्।

स्वपितृन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

तिलक लगाने का मन्त्र—

ॐ आदित्या वसवोरूद्राः विश्वेदेवा मरूद्गणाः।

तिलकं ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।

धूप की पूजा करे—

ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ़्यो गन्धोत्तमः।

आघ्रेयं सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ धूपाय नमः॥ पाद्यं........आचमनीयं समर्पयामि।

फिर दीप पूजा करे—

ॐ दीपोज्योति परब्रह्म दीपोज्योति जनार्दन।

दीपोज्योति हरतु मे पापं दीप ज्योति नमोस्तुते॥

ॐ दीपाय नमः॥ पाद्यं...........आचमनीयं समर्पयामि।

फिर प्रतिज्ञा संकल्प करें—

हरि ॐ तत्सत् ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परोर्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविशतितमे कलियुग कलिप्रथम-चरणे जंबू द्वीपे भारत खण्डे आर्य्या वर्तैक देशान्तर्गते पुण्य वृहस्पति क्षेत्रे अमुक संवत्सरे अमुक अयने अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माऽहं (वर्मा गुप्ता, दासोऽहंवा)

श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्ति कामः श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं पितृ सत्गत्यर्थं पितृ श्राद्ध कर्माऽहं करिष्ये॥

हाथ में फूल लेकर विश्वेदेव का आवाहन करें—

ॐ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबला येऽत्र बिहिता श्राद्धे सावधाना भवन्तुते। पाद्यं......आचमनीयं समर्पयामि॥

ॐ विश्वेदेव इहाऽगच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठो वरदो भव मम पूजां गृहाण॥

विश्वेदेव के आसन पर जौ डाले—

ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ॥

अब जनेऊ बायें करके फूल लेकर पितृ आवाहन करें—

ॐ आयन्तु नः पितरः सौम्या सोऽग्निष्वात्ता पथिभिर्दैवयानैरस्मिन् यज्ञे स्वधया माद्यन्तोऽधि ब्रवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्। पाद्यं......आचमनीयं ॥

ॐ पितृदेव इहाऽगच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठो वरदो भव मम पूजां गृहाण ॥

फिर पितृ आसन पर तिल छोड़ें—

ॐ अपहताऽसुरा रक्षाꣳसिवेदिषदः ॥

गायत्री मन्त्र का तीन बार पाठ करें—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

ॐ भूर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

साथ में पढ़े—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती चैव सप्तै ते मोक्ष दायिकाः ॥

अब बिश्वेदेव के अन्न पर सीधा हाथ रखें—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्।

समूढ़मस्यपाꣳसुरे स्वाहा इति पठित्वा।

ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम्-इति पठित्वा।

ॐ इदमन्नम् इत्यन्ने (अन्न के साथ अंगुष्ठ स्पर्श करे)। ॐ इमा आपः।

इति जले (जल के साथ अंगुष्ठ स्पर्श करे)। ॐ इदमाज्यम् इति घृते (घी के साथ अंगुष्ठ स्पर्श करें)।

ॐ इदं हविः इति पुनरन्ने (अन्न के साथ अंगुष्ठ स्पर्श करें)।

अब जनेऊ दायें ही रहते विश्वेदेव के अर्पण करें—

श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति कामः अस्मद्

पितृ अमुक शर्मणः परलोके सत्गत्यर्थं क्षुधादि

दोष निवारणार्थं महालय पितृ पक्षिक श्राद्धे एतद्

(अन्नं) पक्वान्नं प्रजापति दैवतकं सोपस्करं

सदक्षिणं फलसहितं एक ब्राह्मण आहार परिमितं

श्री विष्णु प्रीतये वो नमः ॥

अब जनेऊ बायें करके पितरान्न पर उल्टा हाथ रखें—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

ॐ इदं व्विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।

समूढ़मस्यपाꣳसुरे स्वाहा इति पठित्वा।

ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम्-इति पठित्वा।

ॐ इदमन्नम्। ॐ इमा आपः।

ॐ इदमाज्यम्। ॐ इदं हविः ॥

अब जनेऊ बायें करके पितृ अर्पण करें—

श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्ति कामः अस्मद् पितृ अमुक शर्मणः परलोके सत्गत्यर्थं क्षुधादि दोष निवारणार्थं महालय पितृ पक्षिक श्राद्धे एतद् अन्न प्रजापति दैवतकं सोपस्करं सदक्षिणं फलसहितं एक ब्राह्मणं आहार परिमितं तस्मै ते स्वधा॥

(स्त्री जाति के लिए 'तस्यै ते स्वधा' बोले।)

प्रार्थना करें—

ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत् तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु॥

अब पांच बलिदान करें—

जनेऊ बायें ही कौवे की बलि करें—

ॐ ऐन्द्राः वारुणवायव्याः याम्या वै नैर्ऋर्तास्तथा।

वायसाः प्रतिगृहणन्तु भूमावन्नं मयाऽर्पितम्।

इति काकेभ्यो नमः॥

जनेऊ कण्ठी करके कुत्ते की बलि करें—

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामधवलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ।

ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥

इति श्वाभ्यां नमः ॥

जनेऊ दायें करके गाय की बलि करें—

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्य राशयः।

प्रति गृहणन्तु मे ग्रासं गावस्त्रै लोक्य मातराः ॥

इति गोभ्यो नमः ॥

जनेऊ दायें ही वरुण की बलि करें—

ॐ वरूणस्योत्तम्भनमसि वरूणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरूणस्यऋतसदन्यसि वरूणस्यऋतसदनमसि वरूणऋतसदनमासीत्॥ इति वरूणाय नमः ॥

जनेऊ दायें ही सर्प की बलि करें—

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिविमनु।

येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ इति सर्पेभ्यो नमः ॥

जनेऊ दायें ही अग्नि आवाहन एवम् पूजा करें—

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्॥ ॐ अग्नये नमः ॥ नमस्करोमि ॥ पाद्यं.......आचमनीयं ॥

अब अग्नि में होम करें।

जनेऊ दायें ही—

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदं अग्नये न मम।

ॐ गृह्यभ्यः स्वाहा इदं गृह्यभ्यः न मम।

ॐ अनुमते स्वाहा, इदं अनुमते न मम।

ॐ कश्यपाय स्वाहा, इदं कश्यपाय न मम।

ॐ भूः स्वाहा, इदं अग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदं अग्नयेस्विष्ट कृते न मम।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, इदं सर्वेभ्यो देवेभ्यो न मम॥

अब जनेऊ कण्ठी करके—

ॐ जमदग्नये स्वाहा, इदं जमदग्नये न मम।

ॐ भारद्वाजाय स्वाहा, इदं भारद्वाजाय न मम।

ॐ विश्वामित्राय स्वाहा, इदं विश्वामित्राय न मम।

ॐ गौतमाय स्वाहा, इदं गौतमाय न मम।

ॐ वसिष्ठाय स्वाहा, इदं वसिष्ठाय न मम।

ॐ अत्रये स्वाहा, इदं अत्रये न मम।

ॐ कश्यपाय स्वाहा, इदं कश्यपाय न मम।

ॐ सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो स्वाहा, इदं सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो न मम।

अब जनेऊ वायें करके करें—

ॐ यमाय स्वधा नमः, इदं यमाय न मम।

ॐ धर्मराजाय स्वधा नमः, इदं धर्मराजाय न मम।

ॐ मृत्यवे स्वधा नमः, इदं मृत्यवे न मम।

ॐ अन्तकाय स्वधा नमः, इदं अन्तकाय न मम।

ॐ वैवस्वताय स्वधा नमः, इदं वैवस्वताय न मम।

ॐ कालाय स्वधा नमः, इदं कालाय न मम।

ॐ सर्वभूतक्षयाय स्वधा नमः, इदं सर्वभूतक्षयाय न मम।

ॐ औदुम्बराय स्वधा नमः, इदं औदुम्बराय न मम।

ॐ दहनाय स्वधा नमः, इदं दहनाय न मम।

ॐ नीलाय स्वधा नमः, इदं नीलाय न मम।

ॐ परमेष्ठिने स्वधा नमः, इदं परमेष्ठिने न मम।

ॐ वृकोदराय स्वधा नमः, इदं वृकोदराय न मम।

ॐ चित्राय स्वधा नमः, इदं चित्राय न मम।

ॐ चित्रगुप्ताय स्वधा नमः, इदं चित्रगुप्ताय न मम।

ॐ भूः पितरस्तृप्यन्ताम् स्वधा, ॐ भुवः पितरः तृप्यन्ताम् स्वधा।

ॐ स्वः पितरः तृप्यन्ताम् स्वधा, ॐ भूर्भुवः स्वः पितरः तृप्यन्ताम् स्वधा।

ॐ समस्त पितृगण तृप्ति हेतवे इदं अन्नादिकं, तेभ्यो विभज्य स्वधा नमश्च।

अब जनेऊ दायें करके सूर्य देव को अर्घ्य देवें—

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो, तेजोराशे जगत्पते।

अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

अब परिक्रमा करें—

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणायाः पदे पदे॥

अब विश्वेदेव का विसर्जन करें—

ॐ विश्वेदेवाः प्रीयंताम्॥ 3॥

अब अग्नि विसर्जन करें—

ॐ गच्छ-गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर॥

यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन॥

अब जनेऊ बायें करके पितृ विसर्जन करें—

ॐ अभिरम्यताम्॥ 3॥ अथवा ॐ बाजे वाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्रोऽअमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वा पिवतमादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्दैवयानैः।

अब जनेऊ दाऐं करके प्रार्थना करें—

प्रार्थना मन्त्र

ॐ प्रमादात् कुर्वतांकर्म्म प्रच्यवेताऽध्वरेषु यत्।

स्मरणादेव तद् विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्वा, तपो यज्ञ क्रियादिषु॥

न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत् कृतं तत् सुकृतमस्तु, यन्न-कृतं तत् विष्णु प्रसादाद् ब्राह्मण कृपया च परिपूर्णमस्तु॥

॥ इति शम्॥

अथ शास्त्रीयगोदान-विधिः

प्रतिज्ञा सङ्कल्पं कु०-ओं अद्येत्यादिममात्मना सह एकविंशतिपुरुषोत्तारणपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीतिकामो गोदानं करिष्ये। तदङ्गं ब्राह्मणवरणं तत्पूजनं गोपूजनञ्च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थ श्रीगणपत्यादीन् पूजयिष्ये इति संङ्कल्प्य, यथालब्धोपचारैः श्रीगणपत्यादीन्पूजयित्वा सपत्नीक ब्राह्मणवरणं पूजनञ्च कुर्यात्त।

गौ पर जल सेंचन करें—

ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ७ सूयवासिनी मनवेदसश्या। व्यस्कभ्नारोदसी विष्णवे तेदधार्थ पृथिवीमभितोमयूखैः। इति सम्प्रोक्ष्य आवाहनम्—ॐ आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्यमातरम्। यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापप्रणाशनम्॥

गन्धाक्षत पुष्पों से पूजा करें—

शृङ्गमूलयोः ब्रह्विष्णुभ्यां नमः ब्रह्मविष्णु आवाहयामि ॥ 1॥ शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः सर्वतीर्थानावाहयामि॥ 2॥ शिरोमध्ये महादेवाय नमः महादेवमावा०॥3॥ ललाटाग्रे गौर्य्यै नमः गौरीमावा०॥4॥ नासावंशे षणमुखाय नमः षणमुखमावा०॥ 5॥ कर्णयोः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवा०॥ 6॥ नेत्रयोः शशिभास्कराभ्यां नमः शशिभास्करौ आवा०॥ 7॥ दन्तेषु सर्ववायवे नमः वायुमावा०॥ 8॥ जिह्वायां वरुणाय नमः वरुणमावा०॥ 9॥ हुँकारे सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावा०॥ 10॥ गण्डयोः मासपक्षाभ्यां नमः मासपक्षौ आवा०॥ 11॥ओष्ठयोः सन्ध्याद्वयाय नमः सन्ध्याद्वयम् आवा०॥12॥ग्रीवायाम् इन्द्राय नमः इन्द्रमावा०॥13॥ उरसि साध्येभ्यो नमः साध्यानावा०॥14॥ जंघयोः धर्माय नमः धर्ममावा०॥15॥ खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वमावा०॥16॥ खुराग्रेषु पन्नगेभ्यो नमः पन्नगमावा०॥17॥ खुरमध्ये अप्सरोगणेभ्यो नमः अप्सरोगणानावा०॥18॥ पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावा०॥19॥ सर्वसन्धिषु वसुभ्यो नमः वसूनावा०॥20॥ श्रोणीतटे पितृभ्यो नमः पितृनावा०॥21॥ पुच्छे सोमाय नमः सोममावा०॥22॥ अधोगात्रेषु

द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यानावा० ॥23॥ केशेषु सूर्यरश्मिभ्यो नमः सूर्यरश्मीनावा० ॥24॥ गोमूत्रे गङ्गायै नमः गङ्गामावा० ॥25॥ गोमये यमुनायै नमः यमुनामावा० ॥26॥ क्षीरे सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावा० ॥27॥ दध्नि नर्मदायै नमः नर्मदामावा० ॥28॥ घृते वह्नये नमः वह्निमावा० ॥29॥ रोमसु त्रयस्त्रिशत्कोटिदेवेभ्यो नमः त्रयस्त्रिशकोटिदेवानावा० ॥30॥ उदरे पृथिव्यै नमः पृथिवीमावा० ॥31॥ स्तनेषु चतुर्भ्यः सागरेभ्यो नमः चतुरः सागरानावा० ॥32॥ सर्वशरीरे कामधेनवे नमः कामधेनुमावा० ॥33॥ इत्यावाह्य पूजयेत्।

पाद्यम्— सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि। प्रतिगृह्ण मया दत्तं पाद्यं त्रैलोक्यवन्दिते। अर्घ्यम्— देहस्था या न रुद्राण्याः शङ्करस्य सदा प्रिये। धेनुरूपणे सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥ आचमनीयम्— या लक्ष्मीः सर्वभूतेषु या च देवेष्ववस्थिता। धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु। स्नानम्— सर्वदेवमये मातः सर्वदेवनमस्कृते। तोयमेतत्सुखस्पर्श स्नानार्थ गृह्ण धेनुके॥ इति स्नानार्थमभ्युक्ष्य। वस्त्रम्— आच्छादनं गवे दद्यात्सम्यक् शुद्धं सुशोभनम्। सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरि॥ रक्तचन्दनम्— सर्वदेवप्रियं देवि चन्दनं चन्द्रसन्निम्। कस्तूरीकुङ्कुमाढयञ्च प्रीत्यर्थ प्रतिगृह्यताम्॥ अक्षतान् तिलजान् देवि शुभ्रचन्दनमिश्रितान्। गृहाण परम प्रीत्या गौस्त्वं त्रिदिवपूजिते॥ शृङ्गभूषार्थं स्वर्णशृङ्गम्। चरणभूषणार्थं रजतखुराणि। गलभूषार्थं घण्टाम्। दोहनार्थं कांस्यपात्रम्। सर्वालंकारार्थ यथाशक्तिद्रव्यम्। पुष्पमाला— पुष्पमालां तथा जातिपाटलाचम्पकानि च। पुष्पाणि गृह्ण धेनोत्वं सर्वविघ्नप्रणाशिनि॥ इति मालां बध्नीयात्। धूपम्देवद्रुमरसोद्भूतं गोघृतेन समन्वितम्। प्रयच्छामि महाभागे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ दीपम्— आनन्ददः सुराणाञ्च लोकानां सर्वदा प्रियः। गौस्त्वं पाहि जगन्मातः दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ नैवेद्यम्- सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता। ग्रासं गृह्णातु सा धेनुर्याऽस्तु त्रैलोक्यवासिनी॥ इत्याहारं निवेद्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्— ॐ गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः। गोभ्यो वेदाः समुत्कीर्णाः षडङ्गपादसक्रमाः। ॐ अनेन पूजनेन गोदवेता प्रीयताम्। जनेऊ सव्यकर गोपुच्छ को दक्षिण हाथ में लेकर जौकुश जल से तर्पण करें—

ॐ ब्रह्मा तृप्यतु, ॐ विष्णुस्तृप्यतु, ॐ रुद्रस्तृप्यतु, ॐ मनवस्तृप्यन्तु, ॐ ऋषयस्तृप्यन्तु, ॐ रुद्रातिपुत्रास्तृप्यन्तु, ॐ साध्यास्तृप्यन्तु, ॐ मरुद्गणास्तृप्यन्तु, ॐ ग्रहास्तृप्यन्तु, ॐ नक्षत्राणि तृप्यन्तु, ॐ योगास्तृप्यन्तु, ॐ राशयस्तृप्यन्तु, ॐ वसुधा तृप्यन्तु, ॐ अश्विनौ तृप्येताम्, ॐ यक्षास्तृप्यन्तु, ॐ रक्षांसि तृप्यन्तु, ॐ मातरस्तृप्यन्तु, ॐ रुद्राणि तृप्यन्तु, ॐ पिशाचास्तृप्यन्तु, ॐ सुपर्णास्तृप्यन्तु, ॐ

पशवस्तृप्यन्तु, ॐ दानवास्तृप्यन्तु, ॐ योगिनस्तृप्यन्तु, ॐ विद्याधरास्तृप्यन्तु, ॐ ओषध्यस्तृप्यन्तु, ॐ दिग्गजास्तृप्यन्तु, ॐ यक्षास्तृप्यन्तु, ॐ देवपत्यस्तृप्यन्तु, ॐ लोकपालास्तृप्यन्तु, ॐ नारदस्तृप्यतु, ॐ जन्तवस्तृप्यन्तु, ॐ स्थावरास्तृप्यन्तु, ॐ जङ्गमास्तृप्यन्तु, (कण्ठी कृत्वा) ॐ सनकस्तृप्यतु, ॐ सनन्दनस्तृप्यतु, ॐ कपिलस्तृप्यतु, ॐ आसुरिस्तृप्यते, ॐ वोढुस्तृप्यतु, ॐपञ्चशिखस्तृप्यतु, (अपसव्यम्) तिल जल से तर्पण करें— ॐ कव्यवाड्तृप्यतु, ॐ नलस्तृप्यतु, ॐ सोमस्तृप्यतु, ॐ यमस्तृप्यतु, ॐ अर्यमा तृप्यतु, ॐ अग्निष्वातास्तृप्यन्तु, ॐ बर्हिषदस्तृप्यन्तु, ॐ सोमपाः पितरः तृप्यन्तु, ॐ यमस्तृप्यतु, ॐ धर्मराजस्तृप्यतु, ॐ मृत्युस्तृप्यतु, ॐ अन्तकस्तृप्यतु, ॐ वैवस्वतस्तृप्यतु, ॐ कालस्तृप्यतु, ॐ सर्वभूतक्षयकरस्तृप्यतु,ॐ औदुम्बरस्तृप्यतु, ॐ दध्नस्तृप्यतु, ॐ नीलस्तृप्यतु, ॐ परमेष्ठिनस्तृप्यन्तु, ॐ वृकोदरस्तृप्यतु, ॐ चित्रस्तृप्यतु, ॐ चित्रगुप्तस्तृप्यतु।

ॐ मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये केचित्पितृपक्षकाः। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः॥ ये मे कुले लुप्तपिंडाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा। विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥ वृक्षयोनिगता ये च पर्वतत्वं गताश्च ये। पशुयोनिगता ये च ये च कीटपतङ्गकाः॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥ नरके रौरवे ये च महारौरवसंस्थिताः। असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाकस्थिताश्च ये॥ ते सर्वे० ॥ स्वार्थबद्ध मृता ये च शस्त्रघातमृताश्च ये। ब्रह्महस्तमृता ये च नारीहस्तमृताश्च ये॥ ते सर्वे० ॥ पाशमध्ये मृता ये च स्वल्पमृत्युवशंगताः। सर्वे च मानवा नागाः पशवः पक्षिणस्तथा॥ ते सर्वे० ॥ आब्रह्मास्तम्बपर्य्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु सर्वदा सर्वे गोपुच्छोदकतर्पणैः॥

उसके बाद रस्सी से मुक्तकर बछड़े सहित गौ को पुच्छ से पकड़कर पूर्वाभिमुख होकर संकल्प करें—

ॐ इह पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भारतवर्षे कुमारिकाखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे श्रीभागीरथ्याः अमुकदिग्विभागे इत्यादिदेशं समनुकीर्त्य ॐ ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमस्य कलियुगस्य प्रथमचरणे बौद्धवतारेऽमुकनाम्नि संवत्सरेऽयने ऋतौ मासे पक्षे तिथौ वारे नक्षत्रे योगे करणेऽमुकराशिस्थिते चन्द्रेऽमुकराशिस्थिते सवितरि अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा—यथा स्थानस्थितेषु सत्सु एवंगुणविशिष्टे देशे काले च अमुक-गोत्रोऽमुकोऽहं मम श्रुतिस्मृतिपुराणे-

तिहासोक्तफलावाप्तये ज्ञाताऽज्ञातानेक-जन्मार्जितमनोवाक्कायकर्म जन्यपापापनुत्तये निखिलदुखदौर्भाग्यदुःस्वप्नदुर्निमित्त दुष्टग्रहबाधाशान्तिपूर्वकं धनधान्यायुरारोग्यद्विपदचतुष्पद सन्ततिचतुर्वर्गादिनि-खिलवाञ्छितसिद्धये गौरोमसंख्यकदिव्यवत्सरावच्छिन्नस्वर्गलोक स्थितिकामश्च पितॄणां निरतिशयानन्दब्रह्मलोकावाप्तये च श्रीपरमेश्वरप्रीतये इमां सुपूजितां सालङ्कारां सवत्सां गां रुद्रदैवताममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। दानप्रतिष्ठा—अद्य कृतैतद्गोदानकर्मणः साङ्गतासिद्धये इदं सतुलसीदलं हिरण्यम् अग्निदैवतम् अमुकगोत्राय०। ॐ यज्ञसाधनभूता या विश्वपापौघनाशिनी। विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा।

बन्धुओं के साथ यजमान ब्राह्मण और बछड़े सहित गाय की चार प्रदक्षिणा करें—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तकृतानि च। तानि नाशय धेनोत्वं प्रदक्षिणपदेपदे।। फिर प्रणाम करे— **ॐ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।। नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।। गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सवाहनाः। सर्वे देवास्तनौ यस्याः सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे।** गाय के दाएं कान में बोले— **ॐ ह्रीं नमो भगवत्यै ब्रह्ममात्रे विष्णुभगिन्यै रुद्रदेवतायै सर्वपापप्रमोचिन्यै।** गोपुच्छतर्पितजल से अभिषेक कर गाय का विसर्जन करें और सूर्य को अर्घ्य दें।

इति शास्त्रीयगोदानविधिः।

सूतक पातक निर्णय

अशुद्धता का ही दूसरा नाम 'आशौच' कहा जा सकता है। आशौच दो प्रकार से जाना जाता है— जननाशौच— जिसे 'सूतक' भी कहा जाता है और मरणाशौच— जिसे 'पातक' कहा जाता है।

जीवन का प्रवाह न तो अनियमित वहे और न ही वह किसी भी स्थिति में सर्वथा अवरुद्ध हो, उक्त दोनों परिस्थितियों को सामने रख कर ही शास्त्र ने निष्कंटक मार्ग का निरुपण किया है जिस पर चलते हुए न कभी ठोकर लग सकती है और ना ही फिसलने का भय हो सकता है।

किसी मनुष्य का जन्म या मृत्यु होने पर तत् सपिण्डों और सगोत्रों को अमुक दिन तक 'जननाशौच और मरणाशौच' प्राप्त होता है— शास्त्रों की यह व्यवस्था प्राय: रक्त सम्बन्ध पर स्थिर है, जिसका वैज्ञानिक आधार यह है कि जैसे रेडियो यन्त्र का प्रकम्पन, तत्सम्बन्ध भूमण्डल के समस्त यन्त्रों में 'ईथर' तरंगों द्वारा तरंगित होता प्रत्यक्ष देखा जाता है। आज के युग में इसके चमत्कार-शब्दों का आदान-प्रत्यादान और चित्रों का आदान-प्रदान 'दूरभाष' और 'दूरदर्शन' यन्त्रों से सर्वविदित हो गया है ठीक इसी प्रकार एक व्यक्ति की मृत्यु का प्रभाव तत्समान रक्तसम्भूत निकट सम्बन्धियों पर भी सूक्ष्म रूप से अवश्य पड़ता है। दूसरा उदाहरण नागवल्ली (पान) है। पान का व्यापार करने वालों को ज्ञात है कि जिस बेल के पान सुदूर देशों में भी पहुंच चुके हों संयोगवश यह बेल यदि मूल से कट जाए तो जहां-जहां उसके पान पत्ते पहुंचे होंगे वहीं-वहीं वे सब निश्चित रूप से सड़-गल जाएंगें। तीसरा उदाहरण माता-पिता के कुलज रोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी बराबर चलते रहते हैं और कुलज गुण भी वंश परम्परा में बराबर देखे जा सकते हैं। वैज्ञानिकों ने 'जीन्स' द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि पैतृक गुण सन्तान में अवश्य समाहित होते हैं।

इन सब प्रत्यक्ष उदाहरणों में रक्त का निकट सम्बन्ध ही हेतु माना जा सकता है। ऋषियों ने उस प्रभाव का विश्लेषण करके यह रहस्य निकाल डाला कि आखिर

यह प्रभाव अधिक-से-अधिक किस पीढ़ी तक पड़ सकता है तदनुसार यह निश्चित किया कि चार पीढ़ी तक उनका पूरा प्रभाव रहता है फिर क्रमशः क्षीण होते-होते दसवीं पीढ़ी में प्रायः समाप्त हो जाता है। सपिण्डों पर यहां अधिक से अधिक 10 दिन तक प्रभाव रहता है वहां असपिण्डों पर पीढ़ियों की दूरी के अनुसार घटते-घटते स्नान मात्र तक सीमित रह जाता है। जननाशौच में देव-पितृ कार्य के अतिरिक्त अन्य व्यवहारों में जातक के माता-पिता को छोड़ कर अन्य सपिण्डों और सगोत्रों को आशौच नियमों के पालन में स्वतन्त्रता भी दी गई है, परंतु मरणाशौच की अवधि वर्णों की तारतम्यता के अनुरोध से न्यूनाधिक नियत है, यथा—

शुद्धयेद् विप्रो दशाहेन, द्वादशाहेन भूमिपः।

वैश्यो पंचदशाहेन, शूद्रः मासेन शुद्धयति॥ (मनु-4-83)

अर्थात् ब्राह्मण 10 दिन में, क्षत्रिय 12 दिन में, वैश्य 15 दिन में और शूद्र एक महीने में शुद्ध होता है।

यहां शास्त्र ने ब्राह्मण को केवल 10 दिन तक सामाजिक-धार्मिक कार्यों के भार से उन्मुक्त किया है वहां कृपाभाजन शूद्र को पूरे एक मास की छूट देकर अनुगृहीत किया है। मनोविज्ञान के अनुसार यह स्वाभाविक है कि वेदवेता विचारशील ब्राह्मण जहां 10 दिन में मृतक के शोक को पार करके कार्यनिष्ठ हो सकेगा वहां सेवा आदि कार्यनिरत शूद्र अपने अल्पबोध के कारण महीने भर में शोक सागर को पार कर पाएगा। यही आशय क्षत्रियों और वैश्यों के आशौच काल के न्यूनाधिक्य में निहित है। जननाशौच में केवल माता ही अधिकतया सूतक की पात्र मानी गई है, पिता स्नान मात्र से शुद्ध हो जाता है, ऐसा मनु जी का अभिप्राय है। राजा और राजपुरुष सद्यः शौच माने गए हैं, उनके लिए अधिक दिन का आशौच बन्धन नहीं, क्योंकि प्रजा रक्षण का पुनीत कार्य उनका पालन धर्म है।

प्रथम मास में गर्भस्राव हो जाने पर माता को दो दिन का आशौच है

दूसरे मास में गर्भस्राव हो जाने पर माता को तीन दिन का आशौच है

तीसरे मास में गर्भस्राव हो जाने पर माता को तीन दिन का आशौच है

चतुर्थ मास में गर्भस्राव हो जाने पर माता को चार दिन का आशौच है

पंचम मास में गर्भस्राव हो जाने पर माता को पांच दिन का आशौच है

छठे मास में गर्भस्राव हो जाने पर माता को छह दिन का आशौच है

सातवें मास के बाद गर्भस्राव में एवं प्रसव में माता एवं अन्यों को दस रात का पूर्णाशौच होता है।

जन्म से पूर्व पुत्र के मरने अर्थात् मृत उत्पन्न होने पर अथवा 10 दिन से पहले मरने पर मरणाशौच नहीं होता है परन्तु पूर्ण जननाशौच रहता है।

10 दिन से छह वर्ष तक अनुपनीत के मरने पर सब को तीन दिन का आशौच होता है।

छः वर्ष बाद अनुपनीत अथवा उपनीत के मरने पर सम्पूर्ण शौच सब को होता है।

रजोदर्शन पूर्व कन्यामृत हो जाने पर तीन दिन का आशौच रहता है एवं रजोदर्शन उपरान्त विवाहपर्यन्त पितृपक्ष में पूर्णाशौच होता है तथा विवाहानन्तर पति पक्ष में सम्पूर्णाशौच होता है।

नाना एवं दौहित्र के मरने पर क्रम से तीन-तीन दिन का आशौच होता है।

जामाता एवं सास-ससुर के मरने पर क्रम से एक दिन एवं तीन दिन का आशौच होता है।

गुरु-शिष्य के मरने पर तीन-तीन दिन का आशौच होता है।

दिन को शव स्पर्श से नक्षत्र दर्शन एवं रात्रि को शव स्पर्श में सूर्य दर्शन से शुद्धि होती है।

रजस्वला स्त्री को तीन दिन का आशौच होता है।

दस दिन के आशौच में दो दिन से लेकर पांचवी रात्रिपर्यन्त सजातीय दूसरे दस दिन के आशौच के आने पर पूर्वाशौच से शुद्धि होती है। छठे दिन से नवम रात पर्यन्त दूसरे आशौच की प्राप्ति हो तो दूसरे आए हुए आशौच से शुद्धि होगी। दसवें दिन आशौच की प्राप्ति हो तो उस दिन के बाद से दो दिन की अधिक शुद्धि के लिए करे।

जननाशौच के मध्य में मरणाशौच या मरणाशौच के मध्य में जननाशौच आ जाए तो मरणाशौच से शुद्धि होती है।

आशौच अन्न का भक्षण करने पर एक दिन का आशौच होता है। जीते हुए जिसने अपना जीवच्छ्राद्ध कर लिया है, उसके मरने पर, योगियों के मरने, पतितादि के मरने पर, आपद्ग्रस्तों का, शिल्पियों का और वैद्य का आशौच नहीं होता है।

यज्ञादि के प्रारम्भ हो जाने पर आशौच पड़ जाए तो यजमान एवं आचार्य को उतने कर्म तक आशौच नहीं होता है।

राजा, राजा का नौकर, वैद्य, शिल्पी, दासी दास आदि को अपने कार्य में आशौच नहीं होता है।

जननाशौच में नालच्छेदन के पूर्व हिरण्य, धान्य आदि प्रतिग्रह में दोष नहीं होता है।

जननाशौच या मरणाशौच में या अन्य मरण में उसके संस्कार करने में दोष नहीं होता है।

किसको कितने दिन का सूतक-पातक लगता है ?

सकुल्य को तीन रात्रि, गोत्रज को स्नान मात्र का सूतक है।

चार पीढ़ी में	10 रात्रि तक
पांचवी पीढ़ी में	6 रात्रि तक
छठी पीढ़ी में	4 रात्रि तक
सातवीं पीढ़ी में	3 रात्रि तक
आठवीं पीढ़ी में	1 रात्रि तक
नवमीं पीढ़ी में	दो प्रहर का

दसवीं पीढ़ी में स्नानमात्र का ही सूतक होता है।

देशान्तर गए हुए को 10 दिन के भीतर खबर सुनने पर 10 दिन में सूतक की निवृत्ति हो जाएगी तथा 10 दिन बाद वर्ष भर के भीतर सुने तो तीन रात्रि में पवित्र हो जाता है। गरुड़ पुराण के अनुसार जननाशौच और मरणाशौच में सब वर्णों को दस दिन का सूतक है ऐसा कलियुग में शास्त्र निर्णय है।

आशौच में आशीर्वाद, देवपूजा, अभिवादन, खटिया पर सोना, स्पर्श करना आदि कार्य नहीं करने चाहिए। नित्य नैमित्तिक काम्य कर्मों को सूतक में नहीं करना चाहिए।

व्रतादि को करने वाले, महामन्त्र जापक को, श्रोता, अग्निहोत्री ब्रह्मनिष्ठ, यति, संन्यासी, राजा इन सब को सूतक नहीं लगता है। और भी—

(क) देव यात्रा विवाहेषु यज्ञप्रकरणेषु च।
उत्सवेषु च सर्वेषु स्पृष्टास्पृष्टं न विद्यते॥

(बृहत्पाराशरीय धर्मशास्त्र)

अर्थात् देवयात्रा, विवाह आदि यज्ञ प्रकरणों में तथा सभी उत्सवों में स्पर्श, अस्पर्श का दोष नहीं होता है।

(ख) आसन शयनं यानं नावमपि तृणानि च।
चाण्डाल-पतितं-स्पृष्टं मारुतैनेव शुद्धयति॥
(बोधायन स्मृति)

अर्थात् आसन (कुर्सी, वायुयान, जलपोत, रेलगाड़ी आदि की सीटें) शय्या , वाहन, नौका, घास (चटाई, मुड़े, टाट आदि) आदि चाण्डाल या पतित द्वारा स्पर्श होने पर वायु लगने से ही शुद्ध हो जाते हैं।

इसी प्रकार विषम परिस्थितियों में (जैसे भूकम्प, बाढ़, डाकाजनी, भगदड़ आदि में) सामूहिक निर्माण कार्यों में यज्ञों और महोत्सवों (जैसे सभा, जुलूस, नगर शोभायात्रा, पर्व स्नानादि) में स्पर्शास्पर्श का अधिक विचार नहीं करना चाहिए।

— इति —